संत मयाराम जी द्वारा रचित

अमावस्या व्रत कथा

''हिन्दी टीका सहित''

सम्पादक एवं टीकाकार–

कृष्णानन्द आचार्य

प्रकाशक

जाम्भाणी साहित्य अकादमी

''श्री विष्णवे नमः''

अमावस्या व्रत कथा

प्रकाशक : जांभाणी साहित्य अकादमी
सैक्टर–1, ई–134, जयनारायण व्यास कॉलोनी
बीकानेर, (राजस्थान)
Email - jsakademi@gmail.com

द्वितीय संस्करण : 2013

मूल्य : 15/–

ISBN : 978-93-83415-02-1

© : जांभाणी साहित्य अकादमी

–: मुद्रक :–

Amavasya Vrata Katha by Krishnanand Aacharya
Pages : 40

भूमिका

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।
(यजुर्वेद – अ. 19, म. 3007)

वेद मंत्र कहता है कि व्रत के द्वारा दीक्षा की प्राप्ति होती है। दीक्षा से दक्षिणा की प्राप्ति होती है तथा दक्षिणा से श्रद्धा और श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है। सत्य से साक्षात्कार करने के लिये सर्वप्रथम व्रत का ही आश्रय लिया जाता है। किसी कार्य को पूर्ण करने के लिये कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व किये जाने वाले संकल्प को ही व्रत कहा जा सकता है। यदि कार्य प्रारम्भ से पूर्व हम व्रत लेते है कि ''कार्यं वा साधयामि देहं वा पातयामि'' कार्य ही सिद्ध पूर्ण करूंगा या शरीर ही त्याग दूंगा। यही व्रत है और कार्य पूर्ण करवाने में अत्यन्त सहयोगी है।

मानव का अन्तिम लक्ष्य सत्य की प्राप्ति करना ही है। सत्य व्रत से प्राप्त होता हैं। हमारी वृतियां अत्यन्त चंचल है। पंचवृत्तियां अर्थात् पांच ज्ञानेन्द्रियां पंच विषयों को स्वाभाविक रूप से ग्रहण करती है, मन ही इन इन्द्रियों का प्रेरक है। सर्वप्रथम हमें इन पांचों पर अधिकार करना होगा, तभी व्रत तथा सत्य की प्राप्ति रूप लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। जीभ के अग्र भाग में स्थित रसना रस को ग्रहण करती है, वह रस हमें भोजन, जल, दूध, रस आदि भोज्य एवं पेय पदार्थों से प्राप्त होता है। इन भोज्य एवं पेय पदार्थों का सेवन न करना भी व्रत कहलाता है। निर्धारित कुछ समय तक हम अपने आपको कितना संयमित रख पाते है। यदि हमने अपने संकल्प को पूर्ण कर दिया हैं तो विजय को प्राप्त हो चुके हैं, यह विजय हमें सत्य तक पहुंचा देगी। हमारा तन–मन भी पूर्णरूपेण स्वस्थ हो जायेगा, आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

गुरू जाम्भोजी ने कहा है –**''घण तण जीम्या को गुण नाहीं मल भरीया भण्डारूं''** अधिक जबरदस्ती ठूंस – ठूंस करके खाने में कोई गुण नहीं है। आवश्यकता से अधिक खाया हुआ तो शरीर के वजन को ही बढ़ाता है, व्यर्थ का भार ही ढ़ोना हैं। भूख लगे या न लगे भोजन तो करते ही रहना है, इससे भोजन की पाचन क्रिया के ऊपर सीधा प्रभाव पड़ता है। अधिक खाने से हमारी पाचन करने वाली जठराग्नि मंद पड़ जाती है, जिससे भोजन ठीक ढ़ंग से पच नहीं पाता है, शरीर में विकार पैदा हो जाता है, वह विकार ही रोग का रूप धारण कर लेता है। रूग्ण हो जाने पर डाक्टर, वैद्यों का इलाज–दवाई प्रारम्भ हो जाती है, भोजन बंद हो जाता है। दरअसल में

तो भोजन का बंद हो जाना ही व्रत यानि इलाज है, दवाई तो केवल निमित मात्र ही है। इसलिये अनेक बीमारियों का इलाज भी व्रत ही है। इसलिये यदा–कदा निराहार रह करके व्रत करना उत्तम है।

व्रत जीवनोपयोगी है, करना परमावश्यक है किन्तु कब और कैसे करना चाहिये? व्रत की तिथि एवं वार घड़ी आदि अनेकानेक निश्चित की गयी है। जिसमें प्राचीन शास्त्रों में वर्णित चन्द्रायण व्रत प्रसिद्ध है, जो चन्द्रमा से सम्बन्ध रखता है।चन्द्रमा का घटने व बढ़ने के आधार पर भोजन की मात्रा भी बढ़ाई –घटाई जाती है। जैसे पूर्णमासी को चन्द्रमा सोलह कलाओं से परिपूर्ण होता है, पूर्णमासी के दिन तो चन्द्रमा पूर्ण होने से भोजन पूर्ण किया जाता है। पूर्णमासी को भोजन करके व्रत करने का संकल्प किया जाता है, प्रतिपदा के दिन अपने नित्यप्रति आहार में से एक भाग त्याग कर दें। ज्यों–ज्यों आगे तिथियां बढ़ती जायेगी त्यों–त्यों एक–एक कला चन्द्रमा की घटती जायेगी, तदनुसार ही भोजन की मात्रा घटाते जावें, अमावस्या को चन्द्रमा केवल एक कला ही शेष रह जाता है, पन्द्रह कलाएँ घट जाती हैं। अमावस्या के दिन पूर्णतया निराहार ही रहै। अमावस्या के पश्चात् चन्द्रमा की कलाएं बढ़नी प्रारम्भ हो जाती है, उसी के अनुसार भोजन की मात्रा भी प्रतिपदा के दिन एक ग्रास से प्रारम्भ होती है, द्वितीया के दिन दो ग्रास, उसी प्रकार से आगे–आगे तिथियां बढ़ती जायेगी, उसी अनुसार चन्द्रमा की कला भी बढ़ती जायेगी और भोजन की मात्रा भी बढ़ाते हुए पूर्णमासी के दिन पूर्ण भोजन किया जाता है। इस प्रकार से एक महीने का यह व्रत पूर्णमासी से प्रारम्भ और पूर्णमासी को ही पूर्ण किया जाता है।इसका मध्यस्थ अमावस्या होती है, इसलिए अमावस्या को पूर्णतया निराहार रहना भी चन्द्रायण व्रत कहलाता है। यह व्रत इसलिये किया जाता है कि कोई बहुत बड़ा अपराध पाप हो गया हो, उस पाप की शांति हेतु इस व्रत का विधान है।

अन्य भी अनेक प्रकार के व्रतों का विवरण शास्त्रों में प्राप्त होता है जैसे **''प्रायोपवेश व्रत''** यह व्रत राजा परीक्षित ने किया था। ऋषि द्वारा सातवें दिन मृत्यु का शाप सुनकर राजा परीक्षित गंगा किनारे जा करके बैठ गये थे तथा सात दिनों तक अन्न–जल का परित्याग करके भागवत कथा का श्रवण किया था। मृत्युपर्यन्त अन्न–जल का परित्याग करके भगवान की लीलाओं का गुणगान करना एवं मुक्ति प्राप्ति हेतु सांसारिक विषय–वासनाओं का परित्याग करके ज्ञान श्रवण मनन निदिध्यासन करने को ही ''प्रायोपवेश व्रत'' कहा जाता है, जिसे राजा परीक्षित ने परिस्थितिवश किया था, मृत्यु समीप ही आ गयी थी, ऐसे समय में यह व्रत किया था। मृत्यु के भय से निवृत्त होने का यह परम उपाय था, जो राजा परीक्षित ने किया था।

दिती द्वारा कृत पुंसवन व्रत का वर्णन भागवत के षष्ठ स्कन्ध में आता है। दिती ने अपने पति कश्यप से इस व्रत का विधिविधान पूछा था तथा कश्यप ने विस्तार से वर्णन किया है। एक वर्ष में पूर्ण होने वाले इस व्रत का प्रारम्भ मिंगसर (मार्गशीर्ष) महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है और एक वर्ष में पूर्ण किया जाता है। यह व्रत पुत्र की कामना से किया जाता है। दिती के पुत्र हिरण्यकश्यपु एवं हिरण्याक्ष को जब भगवान विष्णु ने ही नृसिंह रूप धारण करके मार दिया था तब दिती ने अपने पति के निर्देशानुसार यह व्रत किया था कि मुझे ऐसे पुत्र की प्राप्ति होवे, जो इन्द्र आदि देवताओं को मार सके। कश्यप ने कहा – हे देवी! यह तो तुम्हारे व्रत पर ही निर्भर करता है। यदि यह व्रत ठीक प्रकार से पूर्ण हो गया तो तुम्हारी कामनाएं सिद्ध होगी अन्यथा तुम्हारा जो पुत्र होगा, वह देवताओं का बन्धु हो जायेगा। दिती को विधान बतलाते हुए निर्देश दिया था कि इस व्रत का आचरण करते समय किसी प्राणी की मन, वचन, कर्म से हिंसा नहीं करनी चाहिये किसी को बुरा–भला न कहै, झूठ न बोलें, किसी अमंगल (अछूती) वस्तु को स्पर्श न करें, क्रोध न करें, वस्त्र धुला हुआ पहने, जूठा भोजन न करें, रजस्वला स्त्री का देखा हुआ और छुआ हुआ भोजन न करें, संध्या के समय भगवान की संध्या–चिन्तन करें, अन्य सांसारिक कार्य न करें इत्यादि नियमों का पालन दृढ़ता से करना तथा भगवान का जप, पूजन, हवन, सत्संगति आदि शुभ कार्यों में जीवन व्यतीत करना। दिती नें यह व्रत दृढ़ता से किया था, जिससे उसके गर्भ से उन्नचास मरूद्गण पैदा हुए थे जो इन्द्र के समान ही देवता बनकर इन्द्र के पास ही रहने लगे थे। यह सभी कुछ भगवान की आराधना पवित्रता का व्रत लेने से ही सम्भव हुआ था। वास्तव में सच्चे मानव का जन्म होना इसी व्रत के प्रभाव से ही सम्भव है। माता का संस्कार गर्भस्थ शिशु पर अवश्य ही पड़ता है। माताएं इस व्रत द्वारा अच्छी सन्तान पैदा कर सकती है, इस धरती को ही स्वर्ग बना सकती है।

भागवत् के अष्ठम् स्कन्ध में पयोव्रत का विधिविधान कश्यप ने अपनी दूसरी भार्या अदिति को बतलाया था। एक समय दैत्यों के अधिपति बलि ने अपने अनुयायियों सहित स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था। देवमाता अदिति को इस घटना से अति दुःख हुआ था। उसी समय कश्यप जी ने अपनी समाधी को छोड़कर देखा कि प्रिय अदिति अति दुःखी हो रही है। कश्यप ने पूछा कि क्या कारण है दुःखी होने का। क्या गृहस्थ के मुख्य चार पदार्थ धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष की प्राप्ति में किसी प्रकार का विघ्न तो नहीं आ गया है? यदि ऐसा हो तो दुःख होना स्वाभाविक है। अदिति की भावना को समझकर कश्यप ने भगवान को प्रसन्न करने वाला पयोव्रत करने की आज्ञा

प्रदान की थी और बतलाया कि इस व्रत से भगवान स्वयं प्रसन्न होकर तुम्हारा कार्य सफल करेंगे। देवी कहने लगी कि हे देव! यह व्रत कैसे और कब किस प्रकार से करना चाहिये? बारह दिनों तक इस व्रत का पालन भली भांति से किया जाता है। फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा (एकम) से प्रारम्भ किया जाता है। द्वादशी तक लगातार अन्न का परित्याग करके केवल दूध ही आहार रूप में ग्रहण किया जाता है, इसलिये इसे पयोव्रत कहते है। इन्हीं दिनों में होम, जप, तप, शुद्ध क्रियाओं नियमों का पालन करें, नित्य निरन्तर भगवान के भजन में ही समय व्यतीत करें। अदिति देवी ने ऐसा ही पयोव्रत किया था, जिससे उनकी सन्तान हुई, जो स्वयं भगवान विष्णु ही वामन रूप में अवतार लेकर अदिति के गर्भ में आये और राजा बलि को स्वर्ग से पाताल को भेजा। यह बारह दिनों का पयोव्रत करने से भगवान स्वयं ही प्रकट हुए थे और देवताओं का कार्य सिद्ध किया था। इसलिये पयोव्रत का विधान शास्त्र सम्मत एवं अनुकरणीय तथा वरणीय हैं।

भागवत् के नवम् स्कन्ध में प्रसिद्ध अम्बरीष की कथा आती है। अम्बरीष एक धर्मात्मा एवं श्रद्धालु राजा थे।सदा ही धार्मिक कार्यकर्मों को अच्छी प्रकार से निभाते थे। अम्बरीष ने एक समय भगवान कृष्ण को प्रसन्न करने के लिये एक वर्ष तक द्वादशी (बारस)का व्रत करने का संकल्प किया। उन्होंने अपने नियमानुसार एक वर्ष की तेईस द्वादशियों का व्रत तो निर्विघ्न पूर्ण कर लिया था। अन्तिम द्वादशी के समय जब व्रत का पारण होना था, उसी समय जब द्वादशी का व्रत पूर्ण करने की तैयारी में थे, उसी समय ही ऋषि दुर्वासा जी अकस्मात आ गये।अतिथि का आदर सत्कार किया और भोजन के लिये निवेदन करने पर निमंत्रण स्वीकार करके यमुना जी पर चले गये, वहां पर स्नान संध्यादिक आवश्यक कृत्यों में लग गये। इधर अम्बरीष ने ऋषियों से पूछा कि अतिथि को भोजन करवाने से पूर्व भोजन करना तो अपराध हैं और दूसरी तरफ द्वादशी केवल आधा मुहूर्त शेष रह गयी है, ठीक द्वादशी समाप्ति पर भोजन करना आवश्यक है अन्यथा आगे त्रयोदशी में प्रदोष लग जायेगा। द्वादशी का पारण नहीं हो सकेगा, क्या किया जावे, राजा को धर्म संकट में पड़ा देखकर ऋषियों ने सम्मति प्रदान कर दी कि जल ही पी लिया जावे, जलपान ही पारण हो जायेगा और भोजन भी नहीं माना जायेगा। ज्योंही अम्बरीष ने जलपान किया त्योंही दुर्वासा जी आ पहुंचे और यह जानकर कि मुझ जैसे अतिथि को भोजन करवाये बिना ही इस अहंकारी राजा ने भोजन कर लिया है, ऐसा समझकर क्रोधित होकर अपने सिर की एक जटा उखाड़ कर उसकी एक कृत्या उत्पन्न कर डाली जो अम्बरीष को भस्म करने के लिये सामने आती हुई दिखाई दी। उसी समय ही भगवान का

सुदर्शन चक्र भी प्रकट हुआ और कृत्या को तो वहीं समाप्त कर डाला तथा दुर्वासा को मारने के लिये पीछा करने लगा।

दुर्वासा जी भयभीत होकर भागते हुए ब्रह्मा, शिव, विष्णु के पास पहुंचे किन्तु वहां भी रक्षा न हो सकी, अन्तिम अम्बरीष की ही शरण में आने से सुदर्शन चक्र से रक्षा हुई थी। यह था द्वादशी का प्रभाव, जिससे भगवान का सुदर्शन चक्र स्वयं रक्षा हेतु आ गया था। भगवान के भक्त का अपमान करने पर स्वयं भगवान ही अपमान करने वाले दुर्वासा की रक्षा नहीं कर सके थे, आखिर में तो अम्बरीष द्वारा ही रक्षा हुई थी।

उपर्युक्त अनेकानेक व्रतों की श्रृंखला में शास्त्रों द्वारा वर्णित अमावस्या के सर्वोपरि व्रत का उल्लेख मिलता है। अब आगे हम अमावस्या के व्रत पर विचार करके देखेंगे। अमावस्या क्या है? इसके बारे में अथर्वेद कहता है—**''यत् ते देवा अकृण्वन'' ''अमा सह बसतः सूर्यचन्द्रावस्याम् इति अमावस्या''** अर्थात् सूर्य और चन्द्र दोनों एक साथ ही रहते है, ऐसी अवस्था समय को अमावस्या कहते हैं। जब तक सूर्य चन्द्र एक ही राशि में गमन करेंगे, तब तक अमावस्या रहेगी, ऐसी अवस्था महीने में एक बार कुछ समय तक रहती है, ऐसा पर्व ही अमावस्या कहलाता है। अमावस्या दो तरह की होती हैं। प्रथम सिनी वाली, जिसमें चन्द्रमा दिखाई पड़ जाता है किन्तु बाल्यरूपेण ही दिखता है। दूसरी 'कुहू' जिस अमावस्या में चन्द्र की कलाएं सर्वथा न दिखलाई देवे, वह कुहू कहलाती है। वेदों में कहा है—''दर्श पौर्णमास्यां यजेत्'' अमावस्या और पूर्णमासी को यज्ञ अवश्य ही करें। ये दोनों ही महान पर्व की तिथियां है।

देवताओं का आवास अमावस्या कही गयी है। यहां देवता स्वयंमेव कहते हैं कि—

अहमेवास्म्यमावास्यामामा वसन्ति सुकृतो मयीमे।
मयि देवा उभये साध्याश्चेन्द्र ज्येष्ठाः समगच्छन्त सर्वे।।

अर्थात्—मैं ही अमावस्या का अभिमानी देवता हूं, केवल शब्द से ही नहीं हूं किन्तु अर्थ से भी ऐसा हूं। सुन्दर कर्म वाले देवता अमावस्या में यज्ञ रूप से रहते है, यही अमावस्या का नाम है। **''आ मा वसन्ति देवा इति अमावस्या शब्द निरूक्ति''** ये देवता अमावस्या में रहते है। इन्द्र आदि देवता विष्णु सहित अमावस्या तिथि में एकत्रित हो जाते है, उन्हीं देवों की पूजा ही अमावस्या का व्रत कहलाता है। देव पूजन का यह सर्वोपरि श्रेष्ठ दिन है। यही अमावस्या का अमावस्यापन है। विशेष रूपेण पूजा हवन द्वारा ही हो सकती है। इसलिये सांसारिक कार्यों का परित्याग करके हवन ही करना चाहिये।

अमावस्या तिथि वाली रात्रि एवं दिवस हमें धन, ऐश्वर्य प्रदान करने वाली होवें। इसलिये अन्न का परित्याग करके व्रत लेकर हवन द्वारा विष्णु आदि देवताओं की हम उपासना करें, यह शुभ अवसर हाथ से न निकल जावे। हमारा व्रत–संकल्प प्रभु अवश्य ही पूर्ण करेंगे, यह हमारे लिये अन्न रस को खीर के साथ दुहाती हुई आवे। ऐसी अमावस्या की हम हवि से सेवा करते हैं।

अमावस्या को यज्ञ अवश्य ही करना चाहिये; यह वेदों का आदेश है। यज्ञ करते समय विष्णु परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिये। हे अमावास्ये! तेरे बिना कोई भी देवता सब प्राणियों को व्यापक होकर उत्पन्न नहीं कर सका है। अर्थात् तूं ही इन देवताओं को परिग्रहण करके सृष्टि रचने में समर्थ हुई है। हम भी जिस फल की कामना करते हुए तेरे लिये हवि की आहुति देते हैं। वह फल हमको प्राप्त हो और हम धन के स्वामी होवें।

सिनिवाली पृथुष्टुके या देवनामसि स्वसा।
जुषस्व हव्यमाहूत प्रजां देवि दिदिड्ढ़ नः।।

हे अल्पचन्द्रकला संयुक्त अमावस्या की अधिष्ठात्री देवते सिनि वाली!हे अनेकों से स्तुत सिनि वाली!आप देवताओं की बहन है अर्थात् वृष्टि आदि से स्वयं सारिणी होती हैं और समान कार्य वाली होने से आप देवताओं की भगिनी हैं। ऐसी आप इस अभिमुख आहुत हवि का सेवन करें और हे देवते! आप हमको पुत्र आदि प्रजा दीजिये। यहां यज्ञीय अमावस्या को देवताओं की बहन बतलाया है तथा अन्य दूसरे मंत्रों में किन्हीं देवताओं की माता भी अमावस्या को बतलाया है।

यदि अमावस्या के समय में देवता से सम्बन्धित कार्य हवन पूजा, उपवास, पवित्रता आदि नहीं किया तो देवताओं के प्रतिपक्षी राक्षस लोगों का प्रभाव अमावस्या की अन्धेरी रात्रि में बढ़ जाता है। वे राक्षस, भूत–प्रेत आदि उस घर परिवार को आकृष्ट करके दुःख देने लग जाते हैं। इसलिये इन भूत–प्रेतादि से रक्षार्थ अमावस्या का व्रत करना वेद शास्त्रों एवं सद्गुरू जनों ने बतलाया है। अमावस्या पूर्णमासी के पुण्य अवसरों में किया हुआ शुभ कार्य महान फलदायक होता है। वहीं इन्हीं शुभ अवसरों में किया हुआ अशुभ वर्जनीय कार्य महान पापदायक भी हो जाता हैं। इसलिये गुरू जाम्भोजी ने कहा है –

सोम अमावस आदितवारी कांय काटी वणरायो।
गहण गहंतैं बहण बहंतैं निर्जल ग्यारस मूल बहंतै।
कांयरे मुरखा तैं पालंग सेज निहाल बिछाई।
जा दिन तेरे होम न जाप न तप न किरिया।
जान कै भागी कपिला गाई।। 7 ।।

अमावस्या के रहते हुए जिस कार्य से जीव हत्या होती हो, ऐसा कार्य कदापि न करें।ऐसी पवित्र बेला में तो हवन, जप, तप, शुभ कार्य ही करना था, यदि नहीं किया तो हिन्दु कहलाने का कोई हक नहीं है। घर में आयी हुई कामधेनु को तूने भगा दिया।यह अमावस्या तो कामधेनु सदृश सर्व इच्छाओं की पूर्ति करने वाली है तथा संध्या बेला मूल नक्षत्र, ग्रहण के समय निर्जला एकादसी, अमावस्या में सेज पलंग बिछाकर शयन करना या सांसारिक कार्य करना सर्वथा वर्जित है।ऐसे समय में हवन, जप, तप, शुभ क्रियाएं ही करनी चाहिये थी।

उन्नतीस नियमों में एक नियम है कि ''अमावस्या व्रत राखणों भजन विष्णु बतायो जोय'' व्रत अमावस्या का ही रखना तथा भजन जप विष्णु का ही करना चाहिये। अमावस्या एवं भगवान विष्णु का गहरा सम्बन्ध है। अमावस्या व्रत रखें तथा भजन विष्णु का ही करें।

सबद संख्या 101 में कहा है–

नित ही अमावस नित सकरांति, नित ही नवग्रह वैसे पांति।
नित ही गंग हिलोले जाय, सतगुरू चीन्है सहजै न्हाय।।

गुरू जाम्भोजी ने कहा है कि वैसे तो अमावस्या का पर्व नित्य ही होता हैं। सकरांति तथा नौ ग्रह भी नित्य ही हैं तथा गंगा में स्नान भी नित्य ही होता है परन्तु किसके लिये? जो सतगुरू का स्मरण करता है, पहचानता है और ज्ञान रूपी अमृत में लीन रहता है, उसी के लिये नित्य ही है। जो इस प्रकार से ज्ञान गंगा में गोता नहीं लगाता है, उसके लिए अमावस्या आदि की प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी, जो समय–समय पर आती है।

चन्द्रमा हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण ग्रह है। चन्द्र और मन का गहरा सम्बन्ध है और मन व इन्द्रियां शरीर का भी गहरा सम्बन्ध है। अमावस्या को चन्द्र सूर्य दोनों एक साथ हो जाते है, चन्द्रमा का प्रभाव समाप्त हो जाता है, उसी दिन यदि हम व्रत करें तो शरीर स्वस्थ तथा मन स्वस्थ करने के लिये बहुत ही उपयुक्त होगा। क्योंकि चन्द्रमा अन्न औषधि आदि पर अमृत की वर्षा करता है। चन्द्रमा के प्रभाव से ही वनस्पति फूलती फलती है। अमावस्या के दिन चन्द्र अमृत प्रदान नहीं कर पाता, जिससे सम्पूर्ण औषधि रसहीन हो जाती है। वह अन्न आदि सेवन करने से शरीर में अनेक विकार पैदा हो जाते है।अन्न पचाने की शारीरिक प्रक्रिया पर उल्टा प्रभाव पड़ता है।वह अन्न अनेक विकारों को उत्पन्न कर देता हैं, इसीलिये अमावस्या को भोजन वर्जित बताया है, व्रत करने का विधान किया है। यह हमारी शारीरिक मानसिक मांग भी है।

मनुष्य का स्वभाव है कि भूख लगे चाहे न भी लगे, भोजन का समय

हो गया तो भोजन अवश्य ही करेगा। आगे पेट में वैश्वानर अग्नि पचाने में समर्थ नहीं भी है तो भी रसना रस के लिये अवश्य ही भोजन करेगा। इससे मनुष्य बीमार पड़ जाता है। यदि महीने में एक व्रत अमावस्या का ही किया जाये तो सम्पूर्ण रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है। कभी किसी डॉक्टर या वैद्य के पास जाने की आवश्यकता भी नहीं रहेगी।

लोक में अन्य अनेकानेक व्रत प्रसिद्ध तथा प्रचलित हैं, जिनका कोई आधार कारण नहीं है। मनमुखी व्रत लोग ज्यादा करते हैं। कई लोग पूर्णमासी का व्रत भी करते हैं। किन्तु पूर्णमासी व्रत का विधान नहीं है और न ही उचित ही है, क्योंकि पूर्णमासी को तो चन्द्र पूर्ण होता है, उस दिन तो खीर बनाकर भोजन करना चाहिये, जिसकी शरीर के लिये बहुत ही आवश्यकता है क्योंकि पूर्णमासी को चन्द्र पूर्ण होता हैं। अमृत की वर्षा से अन्न औषधि को भरपूर कर देता है। ऐसे अमृत तत्व से वंचित रहना कोई बुद्धिमानी का कार्य नहीं कहा जा सकता।

वेदों–शास्त्रों में अमावस्या व्रत का ही विधान है। पर्व दो ही हैं–अमावस्या एवं पूर्णमासी। यही वेद विहीत कर्म है, करना चाहिये। द्वापर में भगवान कृष्ण ने अर्जुन को अमावस्या का महात्म्य बतलाया था, जो अमावस्या व्रतकथा के नाम से संस्कृत में प्रचलित है। उसी को आधार मान करके ''मायारामजी'' ने राजस्थानी भाषा में अमावस्या व्रत कथा लिखी थी, जो यहां हिन्दी टीका सहित प्रस्तुत की जा रही है। मृतसंजीवनी यह अमावस्या व्रतकथा कही गयी है। कहते है कि पाण्डव लोग बारह वर्षों तक सोमवती अमावस्या की प्रतीक्षा ही करते रहे किन्तु नहीं आयी। परन्तु कलयुग में वर्ष में दो तीन सोमवती अमावस्या भी आ जाती है, यह कलयुग के जीवों का सौभाग्य ही कहा जायेगा। किन्तु महत्त्व को न समझने के कारण इस पर्व के लाभ से वंचित रह जाते हैं।

इस छोटी–सी पुस्तिका के द्वारा मेरा यही प्रयास है कि अमावस्या का प्रभाव, पर्व, महात्म्य जो शास्त्रों में वर्णित है, वह साधारण जन–समुदाय तक पहुंचाया जावे। आप पाठक–गण अवश्य ही पढ़ें और अपने जीवन में आचरण करके सुधार लावें। घर आयी हुई कपिला को अनादर करके भगा मत देना। यही आप से आशा एवं अनुरोध है।

आपका–
कृष्णानन्द आचार्य
09897390866

''श्री गुरू जम्भेश्वराय नमः''

अमावस्या व्रत कथा

''श्री विसन जी लिखते अमावस्यारी कथा''

कुण्डलियां—

प्रथम बंदू गुरूदेव कूं, दूतिये बंदू सब साध।
विस्नु बंदू पुन्य तीसरे, जाते मिटे जु व्याध।
जातै मिटे जु व्याध, आधि सब मन की नासै।
जिनकी कृपा प्रताप ते, ज्ञान हृदै प्रकासै।
कटत करम सुख उपजै, पावै अद्भुत भेव।
ऐसो दीन दयाल जो, प्रथम बंदूं गुरूदेव।।1।।

सर्वप्रथम गुरूदेव की वन्दना करता हूं, क्योंकि गोविन्द से भी गुरू महान है। गुरू को प्रणाम करने के पश्चात् सभी सन्तों को प्रणाम करता हूं। तत्पश्चात् विष्णु परमात्मा को नमन करता हूं, क्योंकि विष्णु को प्रणाम करने से व्याधि शारीरिक रोग—कष्ट मिट जाते है तथा मानसिक बीमारियां भी जिनकी वन्दना करने से नष्ट हो जाती है। जिस विष्णु की कृपा के प्रताप से हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जायेगा। अनेक जन्मों के किये हुए पाप कर्म कट जायेंगे और सुख की उत्पति हो जायेगी। परमात्मा की अद्भुत लीला एवं भेद को प्राप्त कर सकेंगे, ऐसे दीन दयाल भगवान विष्णु है, जिनकी उपासना करने से सभी कुछ प्राप्त हो जाता है। विष्णु की प्राप्ति हेतु प्रथम वन्दना गुरूदेव की करता हूं।

चौपई —

सब संतन कूं मस्तक नाऊं, निज गुरू के पुनि पाव पसाऊं।
जिनकी कृपा निरमल बुधि पाऊं, मावस कथा वरण सुनाऊं।।2।।

सभी सन्तों को शीश झुकाता हूं तथा अपने गुरू के चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण करता हूं, पुनः दण्डवत् प्रणाम करता हूं, जिनकी कृपा से मैं निर्मल शुद्ध बुद्धि को प्राप्त कर सकूंगा। जब मेरी बुद्धि पवित्र हो जायेगी, तो मैं अमावस्या की कथा वर्णन करके सुना पाऊंगा।

दोहा—

करि प्रणाम करत हूं, मावस कथा बनाय।
जाकै व्रत ते जात है, पातक सबै नसाय।।3।।
पूछत अरजन कृष्ण सूं, पर उपगारी वैन।
मयाराम जाके सुने, उपजत है सुख चैन।।4।।

मैं मयाराम प्रणाम करते हुए कहता हूं। अमावस्या की कथा का

कथन कर रहा हूं। अमावस्या का व्रत करने से सभी प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। अर्जुन ने श्री कृष्ण से पर–उपकारी वार्ता पूछी थी। उसी वार्ता को सुनने से मयाराम जी कहते है कि सुख– चैन उत्पन्न होगा। जो कृष्ण से अर्जुन ने पूछा था और श्री कृष्ण ने बताया था, वही कथा यह अमावस्या की कही जा रही है, जो दुःखों को काटने वाली है।

''चौपई'' अर्जुन उवाच–

जिहि विधि कलि के दोष न लहिये, सोई उपाय मोहि प्रभु कहिये।
कलि में पापी प्रगट भये, सम दम त्याग जाप जज्ञ गए।।5।।
कांमातुर विषिया चित दीनां, सब नर अबला के अधीनां।
ऐसै पुरष प्रगट कलिमांही, लाज श्रम जिनके कछु नांही।।6।।
ए सब लोगन कैसे जावै, तुव चरनन कूं कैसे पावे।
सो उपाय कहिय मोहि आप, जिंह विधि नास होहि सब पाप।।7।।

अर्जुन ने पूछा–हे कृष्ण! जिस प्रकार से कलयुग में दोषों से दूषित न होवें, ऐसा उपाय कोई हमें बतलाइये। कलयुग में अनेक पापी प्रकट होंगे। कलयुग के प्रभाव से संयम, इन्द्रियों का दमन वश में रखना, त्याग भाव, ईश्वर का जप करना, यज्ञ करना इत्यादि सभी नष्ट हो जायेंगे। इनके विपरीत विषयों में चित्त लगाने वाले, कामनाओं की पूर्ति में ही लगे रहना, ऐसे लोग होंगे जो नारी सुख को ही श्रेष्ठ सुख मानेगे और संसार सुख के ही अधीन सांसारी हो जायेंगे। कलयुग में ऐसे ही लोग प्रगट रूप से होंगे, जिनके किसी प्रकार की लज्जा–शर्म नहीं होगी, पशुवत् व्यवहार करेंगे। ये ऐसे लोग परमगति को प्राप्त कैसे करेंगे। हे प्रभु! आपके चरणों की शरण ग्रहण कैसे करेंगे। ऐसा कोई उपाय बतलाइये, जिससे सभी पापों का नाश हो जाये।

श्री भगवानुवाच–

अर्जुन मावस व्रत जो करै, ताकै पाप सकल ही जरै।
ज्यूं वृक भेड़ अनेक विडारे, सूको काठ अग्न ज्यूं जारै।।8।।
त्यूं इह व्रत करे जो लोई, ताके पाप रहे नहीं कोई।
मावस की महिमा अति घनी, असै भाखी तृभवन धनी।
इहि व्रत करत पाप सब नासै, हृदै उजल ज्ञान प्रकासै।।9।।

श्री भगवान् बोले–हे अर्जुन! जो व्यक्ति भयंकर कलिकाल में अमावस्या का व्रत करे, तो उसके सभी पाप जल जाते हैं। जिस प्रकार से भेड़िया एक होने पर भी अनेकों भेड़ों को डरा देता है, जिस प्रकार से सूखी लकड़ी को अग्नि जला देती है, उसी प्रकार से जो कोई व्यक्ति इस अमावस्या का व्रत करे, तो उसके सम्पूर्ण पाप भस्म हो जाते हैं। अमावस्या रूपी अग्नि या

भेड़िया सूखा काठ एवं भेड़ रूपी पापों को जला देता है, मार देता है। अमावस्या व्रत की महिमा अत्यधिक है। त्रिभुवन नायक भगवान कृष्ण ने ऐसा ही कहा है । यह व्रत करने से पापों का नाश होता है और हृदय में उज्ज्वल ज्ञान का प्रकाश होता है।

अर्जुन उवाच–

दीन दयाल दीन प्रत पारक, संसय हरन ज्ञान विस्तारक।
मावस को निरनो मोहि कहो, कृपा करि इहि सांसो दहो।।10।।

हे प्रभु! आप गरीबों के प्रति दया करने वाले दयालु हो, दीनों की रक्षा करने वाले हो, अनेक प्रकार के संशय मिटाने वाले तथा ज्ञान की अभिवृद्धि करने वाले हो, इसलिये मैं आपसे अमावस्या के बारे में जानना चाहता हूं। कृपा करके मेरा संशय भ्रम मिटा दीजिये एवं अमावस्या व्रत का निर्णय कीजिये।

श्री भगवानुवाच–

सुनि अर्जुन तोहि कहु इतिहास, जाहि सुनत सांसो होय नास।
विप्र एक सोमदत नाम, रहै गंगा तट करि विश्राम।।11।।

हे अर्जुन! सुनों, तुम्है एक इतिहास बतलाता हूं।उस इतिहास के सुनने से तुम्हारा संशय मिट जायेगा।एक सोमदत नाम का ब्राह्मण काशी में गंगा तट पर रहता था।

ताकै एक पुत्र सुखकारी, पुत्र मात पुनि एक कुंवारी।।12।।
गंगाजल में करे सिनान, नीके सेवे श्री भगवान।
गीता गायत्री शट करम, कणवृति करि साधे निज धर्म।।13।।

उस ब्राह्मण के एक पुत्र सुख देने वाला था। पुत्र तथा पुत्र की माता एवं एक कुंवारी कन्या थी। ये सभी चारों जने गंगा में स्नान करते तथा अच्छी प्रकार से भगवान की पूजा करते थे। नित्यप्रति नियम से गीता–गायत्री का पाठ करते तथा संध्या स्नानादि आवश्यक कर्म करते थे। खेतों में जब धान इकट्ठा हो जाता तो पीछे बिखरे हुए अन्न को एकत्रित करके उसी कणवृति से अपना निर्वाह करते थे तथा स्वधर्म का पालन करते थे।

च्यार जने मिली कासी रहे, खावण पीवण हरि निर्वहै।
तिनके घरे जती इक आयो, सोमदत ताहि सीस नवायो।।14।।

सोमदत विप्र अपने परिवार सहित काशी में रहता था। भोजन वस्त्र आदि का निर्वाह प्रबंध स्वयं भगवान विष्णु ही कर रहे थे। उनके घर पर एक यति आया। सोमदत ने उठकर चरणों में अपना शीश झुका करके यति को प्रणाम किया।

चरन धोए आसन बैठारी, अस्तुति करि बहुत विस्तारी।
वृध ब्राह्मणी आय चरन पुनि लागी, आसीस दई होहु सुभागी।।15।।
ब्राह्मण पुत्री डंडवत कीनी, चिरंजी होह आसीस मुनि दीनी।
मुनि आसीस ब्राह्मणी जब सुनी, मन मांही आसंका गुनी।।16।।

मुनि जी के चरणों को धोया तथा आसन पर बैठाया। बहुत प्रकार से आदर–सम्मान किया। जब वृद्ध ब्राह्मणी ने आ करके यति के चरणों में नमन किया, तब यति ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि ''सौभाग्यवती भव'' यानि तेरा सुहाग बना रहै ब्राह्मण की कुंवारी कन्या ने जब यति को नमन किया तब यति ने कहा कि 'चिरंजीव भव' यानि बेटी तेरी उमर बढ़े। इस प्रकार के मुनि के आशीर्वाद को वृद्ध ब्राह्मणी ने सुना, तब शंका पैदा हो गई।

वृद्ध ब्राह्मणी उवाच–

कैसे वचन कहे तुम स्वामी, अति अद्भुति हे अंतरजामी।
मौकूं वर असौ तुम कह्यौ, सो भगवान सदा तुम रह्यो।।17।।
मम पुत्री कूं असी कही, चिरंजीव रहो सदा तम सही।
सो ए कैसे बचन बखाने, हम तो समझत नहिं अयाने।।18।।
याको उत्तर हम कूं दीजे, संशय छेद विलंब न कीजे।।19।।

हे अन्तरयामी ! हे त्रिकालदर्शी ! ये अद्भुत विचित्र वचन कैसे कहै हे स्वामी! आप तो सभी कुछ जानते है। अब मैने आपको प्रणाम किया तो आपने यह कहा कि सदा सुहागन रहो, तुम्हारा सुहाग बना रहै जब मेरी कुंवारी कन्या ने आपको प्रणाम किया, तब आपने दूसरा अनिष्ट वचन चिरंजीव होने का क्यों कहा? हे यति! हम तो अज्ञानी लोग है, आपके कहने का अभिप्राय प्रयोजन नहीं समझ सके है। इस प्रश्न का उत्तर आप हमें दीजिये और हमारे संशय को अतिशीघ्र मिटा दीजिये।

श्रीपात उवाच–

सुनियो दोऊ चित लगाई, याको ब्यौरो कहुं सुनाई।।20।।
तुव पुतरी फेरे जब फिरि है, ब्याह समे याकौ पति मरि है।
चौथे फेरे फिरेगी जबे, काल ग्रासि है पति कूं तबै।।21।।

आप दोनों लोग चित लगाकर सुने, इसका कारण मैं आपको सुनाता हूं। तुम्हारी पुत्री जब विवाह के समय में अग्नि की परिक्रमा करेगी, उसी समय इसका पति मर जायेगा। जब तीन फेरे परिक्रमा पूरी हो जायेगी और चौथी परिक्रमा प्रारम्भ करेगा तो इसका पति मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा।

दोहा–

मम बचन सुनि लीजियो, हृदे धरि विसवास।
चौथे फेरे होयगो, याके पति को नास।।22।।

मेरा वचन ध्यानपूर्वक सुन लीजिये तथा हृदय में विश्वास धारण करें। जब चौथा फेरा फिरेगा तो इस कन्या के पति को काल ग्रस लेगा। इसलिये मैने चिरंजीव होने का आशीर्वाद दिया। जब यह विधवा हो जायेगी, तो मैं इसे सौभाग्यवती होने का आशीष कैसे देता।

चौपई–

वचन सुनत दुखी अति भये, मानों तुसार कंवल वन हए।।23।।

ऐसे यति के वचनों को सुनकर अत्यधिक दुःखी हो गये, मानों भयंकर ठण्ड ने कमल के वन को नष्ट कर दिया हो।

दोहा–

दंपति कै दुख उपन्नौ, कहे विकल ह्वै बेन।
याको कोउ उपाय कहो, जातै होई सुख चैन।।24।।
विघन विनास जास विध होई, कहि समझायो हम कूं सोई।।25।।

दम्पति वृद्ध ब्राह्मण एवं ब्राह्मणी के दुःख उत्पन्न हो गया और व्याकुल होकर वचन कहने लगे। जिससे हमारे ऊपर आने वाला विघ्न टल जाये और सुख चैन हो जाये, ऐसा कोई उपाय बतलाइये। जिस किसी भी प्रकार से विघ्न का नाश हो जावे, वही उपाय आप हमें बतला दीजिये।

श्रीपात उवाच–

कहुं उपाय तुमहि एक बखानी, तुमरे दुख की होवै हानि।।26।।
गूजर एक कदली वन बसै, विभो विलास तास बहु हुलसै।
गाय भैंस धन जांकै घणों, अन्न तास गृह के उक मणौं।।27।।
दासी दास कहा लग कहिये, गीणतां कहुं पार नहिं लहिये।
अति सुलक्षणि ताकै बाम, सो भागवती है ताको नाम।।28।।

यति ने कहा–तुम दोनों को मैं एक उपाय बता रहा हूं, उस कार्य के करने से तुम्हारे दुख का नाश हो जायेगा। एक गुजर कदली वन में रहता है। उसके घर में वैभव धन– दौलत का कोई पार नहीं है। उसके घर में गाय, भैंस आदि दुधारू पशु बहुत है तथा अन्न के कोठे सदैव ही भरे रहते है, जिनका कोई पार नहीं है। अनेक नौकर–चाकर, दास–दासियां है, जिनकी कोई गिनती नहीं है। उस गुजर की धर्मपत्नी सुलक्षणा है, जिसका नाम भागवती है। जैसा नाम है वैसा गुण भी है।

सो वह मावस व्रत नित करे, विध विधान सहित आचरै।
बारह मावस करै चित लाइ, दान देय विप्रन कूं गाई।।29।।

दुध दही सकल बरंता ही, अंन परायो भीट नांही।
ब्राह्मण साध जो कोउ आवै, मनसा भोजन तिन ही करावे।।30।।

वह गुजरी प्रत्येक अमावस्या का व्रत विधि विधान से करती है। इस प्रकार से बारह अमावस्या का व्रत चित लगाकर करती है। ब्रह्मवेता ब्राह्मणों को गऊ दान देती है। सभी दूध–दही अमावस्या को दान कर देती है। पराया अन्न ग्रहण नहीं करती है। कोई भी सुभ्यागत ब्राह्मण, साधु, यति आ जाता है तो उसे उत्तम मनपसन्द भोजन करवाती है।

मावस बारे इहि विध करे, दान पुन्य नीको आचरे।
जो वा गुजरि इहि ठां आवे, या बाई के पति हि बचावे।।31।।

इस प्रकार से बारह अमावस्या का व्रत इस प्रकार से करती है तथा दान–पुण्य भलीभांति करती है। यदि वह गुजरी इस स्थान पर आ जाये तो इस बहन के पति को बचा सकती है, मृत्यु के मुख से उबार सकती है।

दोहा–

चौथे फेरे फिरत ही, मावस को फल देई।
माहा भयानक मृत तैं, बाह बचाय पुन लेइ।।32।।

विवाह के समय में जब अग्नि देव की चौथी परिक्रमा करते समय अमावस्या के व्रत का फल प्रदान करने से महा–भयानक मृत्यु से वह गुजरी फिर से मरे हुए को बचा लेगी, पुनः जीवित कर देगी।

सोमदत्त उवाच–'चौपई'

विभो तास गृह असौ कह्यौ, गिणतां कहुं पार नहिं लह्यौ।
ताको आवैण किहिं विध होई, कहि समझावो रिष जी सोई।।33।।

हे ऋषिवर! उस गुजरी के घर पर धन–दौलत, वैभव, विलास आपने अत्यधिक बतलाया है। जिनका कोई आर–पार नहीं है। भला ऐसी दशा में उनका यहां आना कैसे होगा, यह मुझे समझाकर बतलाइये।

श्रीपात उवाच–

उनके घरे धर्म को वासा, पर उपगारी हरि के दासा।
सोमदत तुम इही विचारो, ताते करे है काज तुमारो।।34।।

उस गुजरी के घर पर सदैव धर्म रहता है।वह परोपकारी तथा हरि की दासी है, विष्णु की भक्त है। हे सोमदत! तुम ऐसा विचार करो, इसलिये तुम्हारा कार्य अवश्य करेगी।

सोमदत्त तब प्रसन्न भयो, श्रीपात कूं भोजन दयो।
भोजन करके आसिका दीनी, सब हिन सूं अज्ञा पुनि लीनीं।।35।।

इस प्रकार की यति की वार्ता सुनकर सोमदत्त अति प्रसन्न हुआ

तथा यति को प्रेमपूर्वक भोजन करवाया। यति ने प्रेम से भोजन करके आशीर्वाद दिया और सभी से आज्ञा लेकर विदा हो गये।

मुनि के चरन सकल ई लागे, असतुति करत बहु अनुरागे।
मुनि अपनी इछया चलि गयो, सोमदत्त कूं इचरज भयौ।।36।।

विदा होते समय पुनः सभी ने मुनि के चरणों में प्रणाम किया। अनेक प्रकार से प्रेम भरी स्तुति एवं विनती करते हुए क्षमा याचना की। मुनि तो अपनी इच्छानुसार चले गये किन्तु सोमदत्त को इस आकस्मिक घटना पर बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

सोमदत्त उवाच–

पुत्र सुनों कहै पितमात, कदली वन कूं जावौ तात।
हम पै तो कछु चल्यौ न जाई, ग्रसे जुरा थकै है पाई।।37।।

माता–पिता कहते हैं कि हे पुत्रो! सुनो, कदली वन को तुरन्त जाओ। हम तो वृद्ध हो गये है, इसलिये हमसे तो चला जाता नहीं है, तुम जाने के योग्य हो।

ताते तम यो कारज करो, मात पिता अज्ञा सिर धरो।
तमरो ईसर करि है भलो, कदली वन कूं अब तुम चलो।।38।।

इसलिये तुम्है यह कार्य करना है। माता–पिता की आज्ञा शिरोधार्य करो, तुम्हारा ईश्वर कार्य पूर्ण करेगा। अब तुम अतिशीघ्र कदली वन के लिये प्रस्थान करो।

मात पिता अज्ञा सुनि लीनी, कदली वन कूं अंछया कीनी।
सुभि दिन देखि चालतो भयो, चलत चलत कदली वन गयो।।39।।

योग्य पुत्र ने माता–पिता की आज्ञा सुनी और कदली वन जाने की इच्छा प्रकट करते हुए शुभ दिन देखकर वहां से चल पड़ा। कुछ दिनों तक लगातार पैदल चलते हुए कदली वन सकुशल पहुंच गया।

शुभ आश्रम देख्यो जब नैन, गयो विषाद भयो उर चैन।
वृक्ष बहुत जांहि नहिं गिने, अंब अनार आंवरे घने।।40।।

शुभ आश्रम को आंखों से देखा तो उसके मार्ग की थकान एवं चिन्ता मिट गयी। हृदय में अलौकिक शांति का उदय हुआ। वहां पर अनेक प्रकार के वृक्ष फूल–फलों से लदे हुए देखे, जिनकी गिनती भी नहीं की जा सकती। जैसे आम, अनार, आंवले अत्यधिक मात्रा में थे, जिन्है वहां पर देखा।

महवा अंबली ताल तमाला, कैथ पाकरी जंब रसाला।
वेलि बिटप तृन सफल सफूला, मत भमर गुंजहि रस भूला।41।
वट पीपर गनती को करै, अति उतंग देखत मन हरै।।42।।

महुवा, इमली, ताड़, तमाल, कैथ, पाकड़, अमरूद, नींबू इत्यादि फल एवं छायादार वृक्ष एवं बेला लता, तृन घास आदि सभी वनस्पति फूल–फल रही है। मदमस्त भंवरे रस में रसिक होकर गुंजायमान कर रहे हैं। सम्पूर्ण आश्रम में भंवरों की गूंज हो रही है तथा अन्य वट, पीपल आदि विशाल वृक्षों की गिनती कौन कर सकता है। उनकी विशालता एवं ऊंचाई देखकर मन उनकी तरफ ही आकृष्ट हो जाता है।

नील सघन पलव फल लाला, अवचल चाह सुखद सब काला।
विपुल विचित्र विहंग मृग नाना, करि कोकिल करि है गाना।।43।।

हरे–भरे सघन पत्ते एवं लाल रंग के फल पके हुए थे। निरंतर एवं चारों तरफ सदा ही सुख रहता है, ऐसे बन आश्रम को देखा। वहां पर बहुत मात्रा में विचित्र रंग–बिरंगे पक्षी एवं वन्य जीव हिरण आदि भी देखे। तोता, मैना, कोयल नाना प्रकार के गीत गा रही है। ऐसे गीतों एवं सौन्दर्य को देखते हुए, सुनते हुए वह ब्राह्मण आश्रम में प्रवेश करता है।

चकवा चातक हंस चकोर, अलिगन गावत नाचत मोर।
सरवर तहां सोभा छवि इधके, तिण मध्य पंकज है बहु विधके।।44।।

चकवा, चातक, हंस, चकोर, भंवरे इत्यादि गाने गा रहे और मयूर नाच रहे हैं।वहां पर सरोवरों की शोभा भी अत्यधिक देखी, उन सरोवरों में अनेक प्रकार के कमल खिले हुए थे।

युं वन देख अनेक प्रकारा, लांघे बहुत नदी गीर नारा।
असै करत वनहि लंघि गयो, बड़ो सरोवर देखत भयो।।45।।

इस प्रकार से अनेक वनों को देखता हुआ, अनेक नदी–पहाड़ों को पार करता हुआ भयंकर वन को पार कर गया। आगे एक बहुत बड़ा जल से भरा हुआ सरोवर दिखलायी दिया।

करि सिनानि निर्मल जल पीयो, विप्र पयाणौं आगे कीयो।
बहु दिन बीते नेरो आयो, आश्रम देख्यौ अति मन भायो।।46।।

विप्र ने उस विशाल सरोवर में स्नान किया एवं निर्मल जल पी करके आगे के लिये रवाना हुआ। बहुत दिनों के पश्चात् चलते–चलते गुजरी के आश्रम के निकट आ गया। गुजरी के आश्रम को देखा तो बहुत ही मनभावना–सुहावना लगा।

भीर भार तहां बहु विध देखी, हृदे उपज्यो हरष विसेखी।
बांमण साध जती संन्यासी, अरू तपोधन वसै उदासी।।47।।

वहां गुजरी के आश्रम में बहुत भीड़ देखी, उस भीड़ को देखकर विप्र के हृदय में आनन्द विशेष हुआ। वहां पर विप्र ने देखा कि ब्राह्मण, साधु, यतिवर, संन्यासी और बड़े–बड़े तपस्वी अवधूत जो संसार से उदासीन रहने

वाले थे, वे गुजरी के आश्रम में आ–जा रहे थे, उन लोगों की भीड़भाड़ देखी थी।

संत पुरषन के आश्रम घने, वषानस वटु जांहि न गिने
तपस्या करै अरू जोग्य विचारे, सदा सर्वदा ज्ञान उचारे।।48।।

वहां पर अन्य सभी सन्त पुरूषों के सुन्दर घने आश्रम थे, उन आश्रमों में वैखानस ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी भी अनगिनत थे। ये लोग तपस्या कर रहे थे और ध्यान योग का विचार करते हुए सदा ज्ञान की वार्ता करते हुए समय का सदुपयोग कर रहे थे।

असं वन मैं गुजरी रहै, धरम नेम नीकै निरबहै
सदाव्रत दिन ही प्रति देवै, हरिजन कूं हित करि नित सेवे।।49।।

ऐसे दिव्य वन में गुजरी रहती है। नियम–धर्म का निर्वाह भली प्रकार से करती है। नित्यप्रति नियम से सदा–व्रत अन्नदान देती है। भगवान के भक्तों की सेवा प्रेम से सर्व हित के लिये सदा करती है।

आगे जान की जुक्ति न बनी, भीर भार देखी तहां घनी।
चाकर बाबर चेरी चेरे, हाली पाली है बहुतेरे।।50।।

उस विप्र को आगे जाकर सीधा गुजरी से भेंट करने की कोई युक्ति दिखलाई नहीं दी, क्योंकि वहां बहुत ही भीड़–भाड़ देखी। चाकर, बाबर्ची, जल भरने वाले, नौकरानी–नौकर, हल चलाने वाले हाली, गऊ चराने वाले पाली बहुत लोगों की भीड़ देखी।

ते सब ताकी आज्ञा चलै, धन पुरूष कूं बहुत मिले।
गुजरी बैठी घर के मांही, तातै ताकूं मिलियो नांही।।51।।

वे नौकर–चाकर सभी गुजरी की आज्ञा पर चलते हैं।उन नौकरों को सेवा का धन बहुत ही मिल रहा है, इसलिए सेवा भी प्रेम से कर रहे हैं। गुजरी अपने भवन में बैठी हुई है, इसलिये उस विप्र का उससे मिलाप नहीं हो पा रहा है।

सदाव्रत को सीधो लियो, ब्राह्मण पुत्र भोजन कीयो।
युं करता बीते दिन सात, गुजरी मिलि न काहू भांत।।52।।

उस विप्र ने अन्नक्षेत्र से सदाव्रत का अन्न ग्रहण किया और ऐकान्त में जाकर भोजन किया। ऐसे नित्यप्रति करते हुए सात दिन व्यतीत हो गये किन्तु किसी भी प्रकार से गुजरी से भेंट नहीं हो सकी।

जाय न सक्यो आगे बहु भीर, मन में विचार कियो मति धीर।
गोबर खात उकरड़ा पड़या, मानस बहैत तहां अड़या अड़या।।53।।

वह विप्र गुजरी तक न जा सका, क्योंकि आगे बहुत भीड़ लगी है।

मन से विचार किया उस बुद्धिमान ने कि क्या किया जावे। उसने देखा कि गोबर, खाद, कंकर–पत्थर आदि मार्ग पर बिखरे पड़े है, आने–जाने वाले लोग वहां से होकर जा रहे हैं, उन्है इस विघ्न–बाधाओं से कष्ट हो रहा है, नंगे पैर ऊपर से ही जा रहे हैं।

खात सकल या डारो ढ़ोय, तो गुजरी से मिलणों होय।
ब्राह्मण पुत्र खात बुहारे, मारग गली जिन सबै सुधारे।।54।।

उस विप्र ने गुजरी से मिलने की युक्ति सोच निकाली और मार्ग में बिखरी हुई खाद, गोबर आदि को साफ करने लगा और सम्पूर्ण मार्ग गलियां साफ कर दी। मार्ग चौड़े हो गये, लोग निर्विघ्न आने–जाने लगे।

ते मार्ग ए भले संवारे, धन्य धन्य कहि ही जन सारे।
आश्रम के सब लोग लुगाई, द्विज महिमा करहि इधकाई।।55।।

वे मार्ग जिनमें गन्दगी बिखरी थी, अब अच्छी प्रकार से सुधार दिये है।सभी जनसमुदाय धन्य–धन्य कह रहे थे।आश्रम के सभी नारी–पुरूष उस ब्राह्मण की बड़ाई कर रहे थे।

या ब्राह्मण की सुनी बड़ाई, देखण कूं दासी इक आई।
दासी देखि अरू घर में गई, बात सकल गुजरी सूं कही।।56।।

इस प्रकार से ब्राह्मण की बड़ाई सुनी, तब उसकी महिमा देखने के लिए एक दासी आयी। दासी ने अपनी आंखों से सेवा कार्य करते हुए उस विप्र को देखा और सभी बात जाकर गुजरी से बतलाई।

दासी उवाच–

एक पुरूष आयो है बारे, गलियां की सो खात बुहारै।
गली सकल सांकड़ी भई, तिण बुहारी चौड़ी करि दई।।57।।

दासी कहने लगी कि एक पुरूष बाहर दूर देश से आया है। वह गलियों की सफाई कर रहा है, सम्पूर्ण मार्ग कंकड़–पत्थरों घास आदि से सिकुड़कर छोटे हो गये थे, उस पुरूष ने साफ करके चौड़े कर दिये है।

दासी बचन सुन्यो जब कानां, गुजरी कीयो मन उनमानां।
प्राति सांगवो बारे ढ़ारूं, खात बुहारत पुरूष निहारूं।।58।।

दासी के वचनों को जब गुजरी ने अपने कानों से सुना और मन में अनुमान किया कि कौन हो सकता है। कल मैं स्वयं अपना आसन बाहर लगाऊंगी और सेवा कार्य करते हुए पुरूष को मैं अपनी आंखों से देखूंगी।

ता दिन सांगवो बारि ढ़ारयो, खात बुहारत विप्र निहारयौ।
दासी म्हेलि रू ताहि बुलायो, छाड़ि सांगो सीस नवायो।।59।।

उस दिन गुजरी ने आसन बाहर लगाया, उस खाद गोबर बुहारते

हुए उस विप्र को देखा।दासी को भेजकर उसे अपने पास बुलाया और स्वकीय आसन छोड़ कर गुजरी ने शीश झुका कर प्रणाम किया।

द्विजवर तबै आसिका दीन्हीं, सीस चढ़ाय गूजरी लीन्हीं।
काहे खात बुहारो देवा, याको हमें बतावो भेवा।।60।।

उस ब्राह्मण श्रेष्ठ ने तब आशीर्वाद दिया, गुजरी ने शिरोधार्य किया। हे भूदेव! आप क्यों गोबर खाद बुहार रहे हैं, इसका कारण आप हमें बतलाइये।

ब्राह्मण उवाच–

दूरो देस ते मैं चलि आयो, आज तुम्हारो दरसन पायो।
कासी नगरी हमरो वासा, ह्यां आयो तुमरे पासा।।61।।

ब्राह्मण कहने लगा कि मैं दूर देश से चलकर आया हूं, आज आपका दर्शन प्राप्त कर सका हूं। मैं काशी नगरी का वासी हूं। यहां पर मैं तुम्हारे पास ही आया हूं।

मोकूं आया दस दिन बीता, तुम हि न मिले बढ़ी उर चिन्ता।
ताते मैं इह कीयो उपाय, जिहि विध्य तुम सूं मिलियो आय।।62।।

मुझे यहां पर आये हुए दस दिन व्यतीत हो गये। आप ही न मिले तो मेरे हृदय में चिन्ता बढ़ने लगी, आपसे मिलन कैसे होगा। इसी उपाय से मिलन हो सकता था, इसलिये मैने यह उपाय किया है।

तबै गुजरी भाखी एह, बाको द्विजवर उत्तर देह।
कहा काज है तुमरे देवा, ताको मोहि बतावो भेवा।।63।।

तब गुजरी कहने लगी कि मुझे आप इस बात का उत्तर दीजिये कि तुम्हारा क्या कार्य है, जो मैं कर सकूं। इस बात का मुझे भेद बतलाइये।

ब्राह्मण उवाच–

एक जती हमरे आयो, मो पित मात सीस नवायौ।
मम बहनि पुनि डंडवत करी, तब श्रीपात बानी उचरी।।64।।

ब्राह्मण कहने लगा कि एक यति हमारे घर पर आया। मेरे माता–पिता ने प्रणाम किया। जब मेरी बहन ने दण्डवत प्रणाम किया, तब श्री यति ने कहा।

श्रीपात उवाच–

सोमदत्त तुव पुत्री जो है, ब्याह समै विधवा इह हो है।
ब्याह समें मरि है पति याको, मो पितु कह्यो उपाय कोउ ताको।।65।।

हे सोमदत! यह जो तुम्हारी पुत्री है, यह विवाह के समय विधवा हो जायेगी अर्थात् विवाह के समय इसका पति मर जायेगा। जब मेरे पिताजी ने बचने का कोई उपाय पूछा तब यति ने बतलाया।

घोस राय जो इहिं ठां आवै, याकै पति हि यह बचावै।
एक अमावस को फल देई, याके पति हि बचाय यूं लेइ।।66।।

घोसराय गुजरी यदि यहां पर आ जावे तो वह इसके पति के प्राण बचा सकती है। एक अमावस्या के व्रत का फल यदि अर्पण कर दे तो इसका पति बच सकता है, इस प्रकार से जीवन रक्षा हो सकती है।

इहि उपाय बिना पति मरि ही, अवर काहु सूं काज न सरि ही।
इह कहि वचन जती चल गयो, मो पित मात हिरदै दुख छयौ।।67।।

इस उपाय के बिना पति मर जायेगा, अन्य कोई उपाय भी नहीं है जिससे प्राणों की रक्षा की जा सके। ऐसा वचन कह करके यति चला गया। तब से मेरे माता–पिता के हृदय में दुःख हो गया है।

मात पिता वृद्ध अति आही, मारग उनपे चल्यो न जाही।
ताते मोकूं अज्ञा दई, तिहिं कारण आयो मैं सही।।68।।

मेरे माता–पिता अति वृद्ध हो गये है, उनसे कठिन मार्गों में चला नहीं जाता, इसलिये मुझे आज्ञा दी है। इसलिए मेरा यहां पर आना हुआ है।

करूणा करि तम वहां पधारो, तम तै सर ही काज हमारो।
पर उपगारी हरि के दासा, इह हमरी पुरवो आसा।।69।।

कृपा करके आप हमारे घर पधारिये, आपसे ही हमारा कार्य सिद्ध होगा। हरि के भक्त सदैव परोपकारी होते है। यह आशा कार्य हमारा आप अवश्य ही पूर्ण करें।

गुजरी उवाच–

मम गृह काज सकल परिहरिहूं, काज तुमारो मैं इह करि हूं।
द्विज महिमा तो श्री मुख गाई, तुम सेवा ते हमहि भलाई।।70।।

मैं अपने घर का सम्पूर्ण कार्य छोड़कर तुम्हारा कार्य अवश्य ही करूंगी, क्योंकि द्विज जनों की महिमा तो स्वयं भगवान ने ही अपने मुख से वर्णन करी है। आपकी सेवा से ही हमारी भलाई होगी।

तुम जो हमरी गली बुहारी, ता को अघ लागो मोहि भारी।
तम कारज आऊ सब साध, तब ही मिटि है इह अपराध।।71।।

आपने तो हमारी गलियां साफ की है, हमारे ऊपर एहसान चढ़ाया है। हम लोग आपके ऋणी हो चुके है। तुम्हारा कार्य मैं पूर्ण करके आऊं, तभी यह कर्ज उतरेगा। मैं निरपराधी हो सकूंगी।

अब तो तुम अपने घर जावो, जोतिषी पूछिर लगन कढ़ावो।
सगाई करि कागद लिखि दीजो, सोधि लगन दिन विलंब न कीजो।।72।।

इस समय तो तुम अपने घर चले जाओ, वहां जाकर ज्योतिषियों से

पूछकर मुहूर्त निकलवाओ।सगाई करके कागज लिख दीजियेगा, लगन वार आदि देख कर दिन निश्चित कर दीजिये, इस कार्य में अधिक विलम्ब देरी न हो।

तब मैं अहूं तुमरे धाम, इंहि विधि सिध्य करि हूं तुम काम।
मनसा भोजन तुरंत करायो, दइ दखणां घरिहि सिधायो।।73।।

जब तुम्हारा कार्य प्रारम्भ हो जायेगा, तभी मैं तुम्हारे घर पर आऊंगी। वहां आ करके इस प्रकार से तुम्हारा कार्य सिद्ध करूंगी। ब्राह्मण को मनवांछित भोजन करवाया, दक्षिणा देकर वहां से विदा किया।

मात पिता के चरनन परयौ, चरित पाछले सब उघरयौ।
केउ दिन बीते आनंद जुता, बड़ी भई सोमदत की सुता।।74।।

कई दिनों के पश्चात् वह विप्र पुनः अपने घर पहुंचा और माता–पिता के चरणों में प्रणाम किया। पिछला सम्पूर्ण वृतान्त कह सुनाया। कुछ दिन तो आनन्द में व्यतीत हो गये। सोमदत की पुत्री विवाह योग्य हो चुकी थी।

मात पिता तब इह बिचारी, ब्याह लायक अब भई कुमारी।
आप सरिखो ब्राह्मण देखि, खटक्रम सहत अचार विसेखि।।75।।

माता–पिता ने तब यह विचार किया कि कन्या अब विवाह योग्य हो चुकी है। अपने ही जैसा संध्यावंदन, पूजा–पाठ, यज्ञ, गायत्री, शुद्ध क्रिया वाला ब्राह्मण देखकर कन्या का विवाह किया जावे।

ब्रह्मदत पुत्र रूप गुन धाम, सिवदत है तास को नाम।
सिवदत सेती करी सगाई, सुखी भए समधी सम पाई।।76।।

ब्रह्मदत का पुत्र रूप तथा गुणों का खजाना है, जिसका नाम शिवदत है। उसी शिवदत से कन्या की सगाई कर दी गई। बराबरी के सम्बन्धी मिलने से अति प्रसन्न हुए।

ब्याह करण की मन में आंनी, लगन कढ़ावो द्विज ज्ञानी।
लगन मास दिन ठावो करी, कागद लिखायो द्विज तिहि घरी।।77।।

विवाह करने का दिन, महीना विचार करके ज्ञानी ब्राह्मणों से लगन निकलवाया। मास, दिन, लगन निश्चित करके गुजरी को ज्ञानीजनों से पत्र लिखवाया।

सिध श्री गुजरी जोग, तुम आयां कटहि इह रोग।
पर उपगारन करूणा रासी, कदली आश्रम के तम वासी।।78।।

सिद्ध श्री गुजरी जोग! आपके आने से ही यह रोग कटेगा। आप तो परोपकारी करूणा के खजाना हो, कदली वन आश्रम में निवास करने वाले हो।

दोष़ रहित हरि के गुण गावो, कृपा करि हमरे गृह आवो।
हम दीनन कूं इह वर दीजो, कागद देखत विलंब न कीजो।।79।।

दोषों से रहित होकर हरि गुणगान भजन करते है, कृपा करके हमारे घर पर पधारो। हम दीन लोगों को वरदान दीजिये।कागज देखकर विलंब देरी न कीजिये, अतिशीघ्र आ जाइये।

कागद ले कासी दहि दीयो, कदली वन हि हालतो कीयो।
वायु वेग जन धावन कीयो, कागद जाइ गुजरी दीयो।।80।।

कागज लिखकर काशी के पत्र वाहक को दे दिया तथा कदली वन के लिये रवाना कर दिया। वायु वेग की भांति शीघ्र गति से पत्र वाहक को दौड़ाया। पत्र अतिशीघ्र ही जाकर गुजरी को दे दिया।

मुखते समाचार कहै वरणी, हिवे जांवणी ढ़ील न करणी।
द्विज धावन कूं भोजन दीयो, समाधान निज कुटुम्ब को दीयो।।81।।

मुख से समाचार वर्णित करके सुनाया। प्रातः काल ही जाना है, ऐसे कार्य में ढ़ील नहीं करनी है। पत्र वाहक द्विज को भोजन करवाया तथा स्वकीय कुटुम्ब को सम्पूर्ण कथा समझायी। उनकी शंकाओं का समाधान किया।

सुता पुत्र नाती जामात, पुत्री पुत्र वधू अरू तात।
दासी दास सेवक सेवकणी, हाली पाली जांहि न गिणी।।82।।

पुत्री, पुत्र, नाती, जवाई, पोता, पोती, दासी, दास, सेवक, सेविका, हाली, पाली इत्यादि कुटुम्बी जनों की कोई गिनती ही नहीं थी।

निज निज काम सबै लगाए, आदर दे सब कूं समझाये।
तिण में पुत्र वधू एक स्याणी, सबहि लायक वाकूं जाणीं।।83।।

सभी को अपने–अपने कार्य में लगा दिया। सभी को सादर उनका अपना–अपना कार्य समझाया। उन सभी में एक बड़े पुत्र की बहू समझदार थी। सबही प्रकार से लायक समझकर विशेष रूप से उन्है बतलाया कार्य समझाया।

सुधर सुलक्षन है गुन मई, ताहि बुलाय सीख इह दई।
सील सुभाय रूप गुन भीनी, ताहि बुलाय सीख इह दीनी।।84।।

बड़ी बहू सुघड़, सुलक्षणा, गुणमयी थी। उसे बुलाकर यह सीख दी कि हे बहू! इनमें तुम ही शीलवान, सरल स्वभाव, सद्‌गुणों से युक्त हो, इसलिये तुम्है यह विशेष शिक्षा दे रही हूं।

हे बहू मैं कासी जाऊं, मास छइक में पाछी आऊं।
गृहतणी जाबतो कीजै, साध विप्र कूं भोजन दीजै।।85।।

हे बहू! मैं काशी जा रही हूं, छः महीने में लौटकर वापिस आऊंगी।घर की रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है।साधु, विप्र को भोजन देना, अतिथि का सत्कार करना तुम्हारा घर का परम धर्म है।

तुम देवर देवराणी दासा, इन सब हिन कूं दई दिलासा।
भयानक काज गृह हवैसी अति, धीरज राखि बीहजैं मती।।86।

तुम देवर–देवरानी, दास–दासियां इन सब को धैर्य बंधाना। यदि मेरे पीछे कोई घर में भयानक घटना घट जावे तो धैर्य रखना, डरना मत।

वह विघन मैं ही परिहरिहूं, हरि कृपा ते नैक न डरिहूं।
बंधू कह्यौ सब ही प्रमाण, बखत देखि तुव कीजो पयाण।।87।।

वह विघ्न मैं ही हटा दूंगी। हरि कृपा तुम्हारे ऊपर रहेगी, इसलिये अल्पमात्र भी डरना नहीं। बहू ने अपनी सास की बात को प्रमाण मान करके स्वीकार किया और कहा कि आप शुभ समय देखकर यहां से प्रस्थान कीजिये।

आप आइज्यौ वेगा घरे, जिन हम कूं न जावो वीसरे।
गांव लोकनि दिलासा देय, तिगुने वीस चाकर संग लेय।।88।

आप अतिशीघ्र वापिस घर पर आ जाइये, हम आपकी प्रतीक्षा में है। कहीं हम लोगों को भूल मत जाना। गुजरी ने सम्पूर्ण गांव के लोगों को आश्वासन दिया। कम से कम साठ सेवकों को साथ में लिया।

दुघरयो साध पयाणों कियो, साथ अपार संग पुन्य लीयो।
सरिता परबत बहु लांघत भए, केउ दिन बीते कासी गए।।89।।

शुद्ध पवित्र संतोषी जो केवल दो घर से ही भिक्षा लेकर जीवन निर्वाह करते है, ऐसे सन्तों ने साथ में प्रस्थान किया तथा साथ में अन्य भी बहुत सारे लोगों को साथ में लिया तथा वहां से गुजरी ने प्रस्थान किया। बीच में अनेक नदी पहाड़ों को पार किया। इस प्रकार से कई दिनों के बाद वह गुजरी अपने सेवकों, सन्तों सहित काशी में पहुंची।

डेरो सकल वारे ही राख्यो, निज जनि सूं असै भाख्यो।
मैं जाऊं छू ब्राह्मण धाम, अपने अपने लागो काम।।90।।

गुजरी ने अपना डेरा काशी नगरी से बाहर गंगा किनारे ही रखा। अपने प्रियजनों से गुजरी ने कहा कि मैं तो ब्राह्मण सोमदत के घर पर जा रही हूं, आप लोग अपना अपना निश्चित कार्य करें।

सोमदत के मंडयौ विवाह, गावहि गीत करि उछाह।
वेद धुनि करे जहां विप्र, तहां आव खरी इह छिप्र।।91।।

सोमदत के घर पर विवाह का कार्यक्रम चल रहा है। गीत गाये जा रहे हैं, उत्सव मनाये जा रहे हैं, ब्राह्मण लोग वेद–मंत्रों की ध्वनि कर रहे हैं। वहीं पर वह गुजरी आकर छिपकर खड़ी हो गयी।

देखी उछाह मगन मन भई, इह उछाह कहां वहां दई।
होम जाप तहां द्विजवर करै, निरमल वेद वांनी उचरै।।92।।

गुजरी उत्सव देख रही है और आनन्द से मग्न हो रही है। ऐसा उछाह अन्यत्र कहां देखने को मिलता है, कदली वन में तो कदापि नहीं। होम, जाप वहां पर श्रेष्ठ ब्राह्मण कर रहे है, निर्मल वेदवाणी का उच्चारण कर रहे है।

इह तमासो देखे छाने, याको भेद न कोउ जाने
ब्राह्मण ब्राह्मणी सोच मन करै, बींद बींदणी फेरे फिरे।।93।।

यह विचित्र खेल गुजरी छुप कर देख रही है। इस बात का पता किसी को भी नहीं है कि गुजरी यहां आ चुकी है। दुल्हा– दुल्हन अग्नि की परिक्रमा कर रहे है। उस समय वृद्ध सोमदत ब्राह्मण एवं ब्राह्मणी मन में चिन्ता कर रहे है कि न जाने अब क्या होगा, गूजरी आयी क्यों नहीं?

असे फेरा लीया तीन, चौथे फेरे भयो मलीन।
गिरण लग्यौ ब्राह्मण जमात, सब हिन के उपनो दुख गात।।94।।

इस प्रकार से दुल्हा तीन परिक्रमा तो कर चुका था। चौथे फेरे में मलीन हो गया, मुख शरीर की कांति उड़ गयी, ब्राह्मण जामात गिरने लगा। ऐसी दशा देखकर सभी के दिल में दुःख पैदा हो गया। मंगलगान में अचानक विघ्न उपस्थित हो गया।

कंठ गत प्राण आय रह्यौ, तब गुजरी वचन यूं कह्यौ।
अरे ब्राह्मण पुत्र सुन्य भाई, जो तो कूं है दुख इधकाई।।95।।

प्राण कंठ में आ गये, मृत्यु निकट आयी देखकर गुजरी ने खड़ी होकर इस प्रकार से कहा–अरे हे ब्राह्मण पुत्र! मेरी बात सुन भाई, जो तेरे को यह अति दुःख आया है।

एक अमावस को फल लेह, इह फल करि जीव हु तुव देहू।
मावस को फल जो है साच, व्रधो आरबल इह मम वाच।।96।।

एक अमावस्या के व्रत का यह फल प्राप्त करो। इसी फल के आधार पर मैं तुम्है जीवन दान देती हूं। यदि यह अमावस्या के व्रत का फल सच्चा है तो इस ब्राह्मण बालक की आयु में वृद्धि होवे, यह मेरा वचन है।

जब गुजरी भाखो वेन, तब द्विजवर के उघरे नैन।
होय सचेतरू बैठो भयो, सांसो सोग सबन को गयो।।97।।

जब गुजरी ने इस प्रकार के वचन कहे, तब द्विज की आंखें खुल गयी और सचेत होकर उठकर बैठ गया। सभी के मन में आया हुआ दुःख शोक मिट गया।

सकल सभा इचरज भई, धन्य धन्य सब हिन कही।
होणें लागो हास विलास, सोमदत की पुगी आस।।98।।

सकल सभा ने इस आश्चर्य को देखा और सभी लोगों ने अमावस्या के प्रभाव को एवं जामाता ब्राह्मण को भी धन्य– धन्य कहने लगे। पुनः मंगल गान, उत्सव आनन्द होने लगा। सोमदत की इच्छा पूर्ण हुई।

सोमदत बोल्यो तिसि घरी, तम हम पे करूणां बहु करी।
घोसराय तुम सम जग थोरे, निजगृह काज तज्यो हित मोरे।।99।।

उस समय सोमदत इस प्रकार से कहने लगा– आपने हमारे दीनों पर बड़ी कृपा की है। हे गुजरी देवी! तुम्हारे जैसे इस संसार में थोड़े ही लोग है, अधिक नहीं है। अपने घर का कार्य छोड़कर हमारी भलाई के लिये दूर देश से चल कर यहां आयी हो और हमारा मनोरथ पूर्ण किया।

कहा बड़ाई तुमरी कीजै, जिनके दरसन सूं अघ छीजै।
विश्नु भक्ति जो हिरदे धरे, तासूं कैसो काज न सरै।।100।।

मैं कहां तक तुम्हारी बड़ाई करूं, जिनका दर्शन करने से ही पाप कट जाते हैं। जो व्यक्ति विष्णु की भक्ति हृदय में धारण करता है, उनसे ऐसा कौन सा कार्य जगत में होगा, जो पूर्ण न हो सके।

तबै गुजरी बोली बांनी, साध संगत नय मारग छांनी।
सरै काज सो तुमरी सेवा, हम इह निहचै कीनी देवा।।101।।

तब गुजरी ने इस प्रकार की सुन्दर वाणी कही। जो साधु संगति वाली, नीति बचन वाली एवं सुपंथ से छनी हुई थी अर्थात् साधु सन्तों द्वारा निर्णित की हुई थी। यह कार्य तो तुम्हारी निस्वार्थ सेवा से ही सिद्ध हुआ है। हमने यह निश्चय कर लिया है।हे भूदेव!

जो नर तुमरी सेवा करे, सोई इह भवसागर तरे।
इह कहि बेन रसोइ दीनी, निज डेरे कूं इछा कीनी।।102।।

जो मानव वेद विद ब्राह्मणों की सेवा करे तो वह इस संसार सागर से पार उतर जाता है। ऐसा कहते हुए एकत्रित हुए वहां ब्राह्मणों को रसोई दी अर्थात् भोजन दिया और स्वयं गुजरी ने अपने स्थान के लिये रवाना होने की इच्छा प्रकट की।

तब बोल्यो ब्राह्मण जमात, सबहि संमत कही इहि बात।
इह मोसूं मोटो गुण कीधो, जीव दान तुम मोकूं दीधो।।103।।

उनके पश्चात् ब्राह्मण दुल्हा कहने लगा। सर्वसम्मत यह बात उसने कही–हे देवी! आपने मेरे पर बहुत बड़ा उपकार किया है।आपने ही मुझे जीवन प्रदान किया। जीवनदान से बढ़कर और कोई दान नहीं है।

दूरि देश ते आये अबै, सांहण बांहण थाकै सबे।
इह एक करूणां पुनि कीजै, दिन पांच सात विलंब लीजै।।104।।

अभी–अभी आप दूर देश से चलकर आये हैं। सवारी के साधन हाथी, घोड़ा, बैल आदि थक गये हैं। इसलिये एक कृपा यह भी कीजिये कि पांच सात दिनों तक यहीं विश्राम कीजिये। रूक जाइये यही प्रार्थना है।

इह सुनि बेन गुजरी भनै, इह्या रह्या हम कूं नहीं बने
बहुत प्रकार करी मनुहारी, मानी नहीं काज गृह भारी।।105।।

ऐसी सुन्दर मनोहर वाणी को सुनकर गुजरी कहने लगी–यहां रहने से हमारा कार्य नहीं बनेगा, बिगड़ जायेगा इसलिये अवश्य ही जाना है। उन लोगों ने बहुत प्रकार से मनुहार की, मनाने की कोशिश की, किन्तु गुजरी ने एक बात भी नहीं मानी और कहने लगी–घर में बड़ा भारी कार्य है। वह मुझे स्वयं ही जाकर करना होगा।

सोमदत के सुता जमाई, तिन्है उढ़ाए बेस मंगाई।
सबहिन पे अज्ञा पुन्य लई, कदली वन कूं चालत भई।।106।।

सोमदत की पुत्री एवं जमाई को वस्त्र मंगवा करके उढ़ाए। उन्है पुत्र–पुत्री के समान स्वीकार किया। पुनः सभी से आज्ञा लेकर कदली वन को प्रस्थान किया।

पांच आदमी लेता सूत, साथे चल्यो सोमदत पूत।
चलत चलत गांवे एक देख्यौ, ताहि निकट सरवर सुभ पेख्यो।।107।।

पांच आदमी अन्य भी वहां के साथ लिये तथा सोमदत का पुत्र भी विदाई देने के लिये साथ में ही चला। वहां से चलते चलते एक गांव देखा, उसी के निकट पवित्र सरोवर दिखाई दिया।

सरवर मध्य कंवल बहु फूले, गूंजत मंजु मधुप रस भूले।
चातक चकवा सारस हंस, बुगला बतक आरड कुलंस।।108।।

तालाब के बीच में बहुत ही कमल खिल रहे है। सुन्दर भंवरे इससे मस्त होकर दिशाओं को गुंजायमान कर रहे है। वहां तालाब पर चातक, चकवा, सारस, हंस, बगुला, बतख, आरंड, कुलंस इत्यादि जलीय पक्षी कलरव कर रहे हैं।

जलचर विपुल कोलाहल करहि, बृहित बैर मुदित मन हरहि।
सघन छांह बहै तृविध्य बयारि, डेरो लियो सरवर की पारि।।109।।

अनेकों जलचर वहां पर कोलाहल की ध्वनि कर रहे हैं।सभी बैर रहित होकर सभी के मन को प्रसन्न करते हुए अपनी ओर आकृष्ट कर रहे हैं। सघन गहरी छाया वृक्षों की शोभायमान हो रही है। तीन प्रकार की शुद्ध निर्मल शीतल सुगन्धित वायु चल रही है। उसी सरवर की पाल पर गुजरी ने डेरा लगाया।

सिनान करन विप्र तहां आयो, ताहि गुजरी निकट बुलायो।
करि प्रणाम बूझ तिथवार, तब ब्राह्मण इह कीयो उचार।।110।।

स्नान करने के लिये एक विप्र वहां पर आया। उसको गुजरी ने अपने पास बुलाया, प्रणाम किया तथा तिथि वार उससे पूछा। तब ब्राह्मण ने इस प्रकार से कहा।

आज सिध जोग तम जानों, वार रवि तिथ चवदस्य मानो।
काल्हि ह्वै है सोमती मावस, धर्म तृन बढ़ै मानु रितु पावस।।111।।

आज सिद्ध योग, वार रविवार, तिथि चवदस, यह तुम मानो। कल ही सोमवती अमावस्या का योग है। इसका फल भी बड़ा विचित्र है। जिस प्रकार से वर्षा ऋतु में धन धान्य तृण आदि बढ़ते है, उसी प्रकार से अमावस्या में भी दिया हुआ दान व्रत बढ़ता हैं।

दान पुन्य जो इहि दिन करै, अनंत गुणों ताको फल फरे।
कहै गुजरी सब ही जानै, मावस फल हमसूं नहीं छाने।।112।।

जो व्यक्ति इस पवित्र दिन में दान पुण्य करता है, उसको अनन्त गुणा फल मिलता है। गुजरी कहने लगी—इस बात को तो सभी जानते हैं। अमावस्या का फल क्या होता है, यह किसी से भी छुपा हुआ नहीं है।

मावस प्रात इहिठां करिहां, तुम्हरी कृपा ते निस तरिहां।
प्रात समें आइज्यौ बरे, कहि प्रणाम गयो द्विज घरे।।113।।

प्रातः काल अमावस्या का व्रत यहीं इसी स्थान में ही करेंगे। तुम्हारी कृपा से हम संसार सागर से पार उतरेंगे। हे विप्र! प्रातः काल पुनः वापिस आना। ऐसा सुनते हुए द्विज घर को चला गया।

गूजरि धाम भई जो रीति, सोई कथा सुनो दे प्रीति।
बड़ो पुत्र गुजरी को हुंतो, राति समैं घर मांही सुतो।।114।।

गुजरी के घर पर जो घटना घटित हुई, उसकी कथा प्रेम से श्रवण करें। गुजरी का बड़ा पुत्र रात्रि में अपने घर पर सोया हुआ था।

ताकी त्रिया ही गुनमई, सेझ सवारन घर में गई।
पतिहि जगावै जाग्यौ नांही, सोच विचार कीयो मन मांही।।115।।

बड़े पुत्र की त्रिया स्यानी समझदार गुणों से युक्त थी। प्रातः काल जब अपने पति की सेवा में पहुंची और अपने पति को जगाने लगी, तब भी जागृत न हो सका। तब उसने मन में विचार किया कि यहां तो बात ही कुछ अन्य है। अपनी सास की कही हुई बात का स्मरण किया।

दोहा—

सेझ सवारन कारन, गई हूती घर मांह।
चमकि उठि अति विकल हवै, मरयौ देखि निज नांह।।116।।

सेझ संवारन के लिये पति के घर में जब पहुंची तो अचानक अपने पति को मरा हुआ देखकर चमक गयी और व्याकुल हो गयी कि यह क्या हुआ।

चौपई—

पतिहि देखि विकल हवै गई, सासु वचन सुमरत पुन्य भई।
तबहि मन में इह ज्ञान विचारयौ, सासु असौ वचन उचारयौ।।117।।

अपने पति को देखकर व्याकुल हो गयी। पुनः अपने सासु के वचनों को स्मरण किया। सासु ने चलते समय कहा था कि कोई विघ्न आयेगा। मन में ऐसा विचार करके धैर्य को धारण किया।

होसी विघन वीहजै मती, तातैं इह कहणो नहीं किती।
जागृत मांहि हुतो पति परयो, बसन उढ़ाय कपाट जु जरयो।।118।।

"विघ्न अवश्य होगा, डरना नहीं" यह सासु ने कहा था। इसलिये यह बात किसी से भी कहनी नहीं है। जिस घर में पति सोया हुआ था, उसे वस्त्र ओढ़ा दिया और किवाड़ बंद कर दिये।

मनमें धीरज धारि सुभागी, उदयो सूर काम तब लागी।
निस अबसेष सबै इहां न्हाए, विप्र गांव के सब बुलाए।।119।।

मन में धैर्य धारण किया उस सौभाग्यवती महिला ने और सूर्योदय होते ही अपने गृहकार्य में लीन हो गयी।उधर गुजरी ने सूर्योदय से पूर्व ही ब्रह्म मुहुर्त में स्नान किया तथा सम्पूर्ण गांव के विप्रों को अपने पास में बुलवाया।

सिनान करण विप्र जे आए, तिन कूं गूजरी बचन सुनावे।
तुमरे गांव मांहि जे विप्र, तिन सबहिन कूं ल्यावौ छिप्र।।120।।

जो विप्र स्नान करने के लिये आये थे, उनसे गुजरी ने इस प्रकार से कहा कि तुम्हारे गांव में जितने भी विद्वान ब्राह्मण है, उन्है अति शीघ्र बुलाकर ले आओ।

मनसा भोजन सबकूं देहूं, जीवन जनम लाभ इह लेहूं।
मावस को व्रत इहि ठां करो, मन वांछित भोजन विस्तरो।।121।।

मैं सभी को मनवांछित भोजन दूंगी। जीवन एवं जन्म का लाभ प्राप्त करूंगी। इसी स्थान पर अमावस का व्रत सभी करें तथा व्रत समापन पर स्वकीय इच्छानुसार भोजन करें, मुझे आशीर्वाद दें।

पइ खोल नाणों तब दीणों, याको देवजी लावो सीधो।
द्विजन कही सबही परमाण, निज जिन घर कूं कीयो पयाण।।122।।

सन्दूक खोल कर जब रूपये दिये और कहा कि इनसे भोजन की सामग्री मंगवायी जाय। द्विजों ने ऐसी बात सुन कर प्रमाण रूप से स्वीकार करके अपने—अपने घर को चले गये।

ग्राम देव आये तब सारे, नारी नर तरण वृधा बारे।
ल्याए मैदो घृत रू दालि, करी रसोई सरवर पालि।।123।।

सभी ग्राम के निवासी द्विजजन वहां पर पधारे। नर— नारी, तरूण, वृध एवं बालक आदि का आगमन हुआ। मैदा, घृत और दाल मंगवाकर सरवर की पाल पर रसोई बनवाई।

सिनान संपाड़ो सबहिनि करयौ, पाठ पुन्य नीकै उचरयौ।
सब ही ब्राह्मण गुजरी आगे, नांव ठांव ले जीमन लागे।।124।।

सभी ने सरवर में स्नान किया। पुनः गीता, गायत्री, विष्णु सहस्त्रनाम आदि का पाठ सस्वर किया। पाठ पूर्ण हो जाने पर सबही ब्राह्मण अपना नाम, स्थान, कुल का परिचय देते हुए गुजरी के सामने भोजन करने लगे।

मनसा भोजन तिने जिमाय, करी चरन सिर नाय।
बालक वृद्ध नारि नर जेते, मनसा भोजन जीमे तेते।।125।।

सर्वप्रथम उन विद्वानों को भोजन करवाया, उनसे प्रार्थना करते हुए दण्डवत प्रणाम किया। तत्पश्चात् बालक, वृद्ध, नर–नारी जितने भी आये हुए थे, उन्होंने प्रेमपूर्वक भोजन किया।

सब विप्रन कूं डंडवत कीनी, मनवांछित आसिका मुनि दीनी।
इहि प्रकार मावस व्रत कीयो, दान विपुल विप्रन कूं दीयो।।126।।

सभी विद्वान गुणीजनों को दण्डवत प्रणाम किया तथा उन मुनिजनों ने गुजरी को शुभ आशीर्वाद प्रदान किया। इस प्रकार से विधि विधान से अमावस्या का व्रत गुजरी ने किया तथा यथा आवश्यकता अनुसार मुनिजनों को दान भी दिया।

मुदत होइ द्विज निज गृह गए, पाछे भोजन करत ए भए।
सबहिन जन सुं अज्ञा लई, कदली वन कूं चालत भई।।127।।

समय व्यतीत हो जाने पर मुनि विद्वान लोग अपने अपने घर को चले गये, तब पीछे स्वयं गुजरी एवं उनके सेवकों ने प्रेमपूर्वक भोजन किया। अमावस्या व्रत का समापन किया। सभी लोगों से आज्ञा लेकर गुजरी अपने सेवकों सहित कदली वन को रवाना हो गई।

इहां व्रत जो गुजरी कीयो, ताही पुन्य करि वहां सुत जीयो।
पति पासि त्रिया ही बैठी, धीरज धरि मनमांहिं सैंठी।।128।।

यहां मार्ग में सरवर तीर पर जो गुजरी ने व्रत किया था, उसी पुण्य के प्रभाव से गुजरी का मृत पुत्र पुनः जीवित हो गया। अपने पति के पास गुजरी की पुत्र वधू बैठी हुई मन में धैर्य धारण किया और हिम्मत से भगवान का स्मरण करते हुए अपने पति को जीवित हुए देखा।

होइ सचेत उठ बैठो भयो, तब त्रिया को संसो गयो।
निज त्रिया सूं ऐसे कही, आज नींद बहुत मैं लई।।129।।

सचेत होकर गुजरी का बड़ा पुत्र उठकर बैठ गया और अपनी पत्नी से कहने लगा कि आज मुझे नींद बहुत ज्यादा आ गयी। ऐसी वार्ता सुनकर त्रिया का संशय मिट गया एवं बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

त्रिया कहै नींद की बातां , नीकै कहि है तुमरी सोता।
पति उठ बाहां ते गयो हथाई, गृह कारज करिहि चितलाई।।130।।

उसकी पत्नी ने भी हां में हां मिलाते हुए कहा–ऐसा ही हुआ है।तुम्हारी नींद एवं सोना तो बड़ा ही विचित्र है।पति वहां से उठकर अपने कार्य में लग गया तथा पत्नी भी अपने गृहकार्य में लग गयी, चित लगाकर घर का कार्य करने लगी

केतन दिन गुजरी आई, कदली वन में बंटत बधाई।
वधू आय पाय सब लागी, आसिस दई होहू सुभागी।।131।।

कुछ दिन व्यतीत होने पर गुजरी ने वापिस कदली वन में प्रवेश किया।सभी बहुओं ने आकर सासु के चरणों में प्रणाम किया।गुजरी ने सभी को आशीर्वाद दिया कि सौभाग्यवती होवो।

पुत्रादिक माता सूं मिलै, गई दुचिंता ई आनन्द झिले।
पुत्र वधू वृतांत बखान्यौ, सासू कहे सकल इह जान्यो।।132।।

पुत्र–पौत्रादिक माता से आकर प्रेम से मिले, दुश्चिंता मिट गयी सभी आनन्द में प्रफुल्लित हो गये। सभी से मिलन होने के पश्चात् बड़े पुत्र की वधु ने सम्पूर्ण वृतान्त सुनाया, तब उसकी सास गुजरी कहने लगी कि मैं तो यह पहले ही जानती थी कि यह होना ही है।

तिहि कारण वन में व्रत कीयो, भोजन दान द्विजन कूं दीयो।
ता पुन ते विघन इह गयो, पुत्र सुनत अति तै विसम भयो।।133।।

इसी कारण से मैंने वन में व्रत किया था। द्विजों को भोजन दान भी दिया था, उसी पुण्य के प्रताप से यह विघ्न चला गया। ऐसी वार्ता सुनकर पुत्र अतिशय विस्मय आश्चर्य को प्राप्त हो गया।

बात सकल ब्राह्मण सांभली, कदली वन में नित रंगरली।
पुत्र वधू कूं सौंप्यौ भार, महिमा करी बार ही बार।।134।।

सम्पूर्ण वार्ता घटनाओं को उस सोमदत के पुत्र ने अपनी आंखों से देखा था। कदली वन में रंगरेलियां, खुशियां ही खुशियां मनायी जा रही है। गुजरी ने भी सम्पूर्ण घर का कार्यभार पुत्रवधू को सौंप दिया। बारंबार पुत्रवधू की महिमा करते हुए गुजरी गृह के कार्यों से निवृत्त हो गयी।

ब्राह्मण पुत्र चलन तब भयो, करि प्रणाम द्रव बहु दयो।
खरची जीमत निज घर आयो, मात पिता कूं सीस नवायो।।135।।

सोमदत के पुत्र ने जब वापिस अपने देश चलने की तैयारी की, तब गुजरी ने बहुत द्रव्य देकर ससम्मान उसे विदाई दी। धन खर्चते हुए खाते–पीते वापिस अपने घर लौटकर माता–पिता को प्रणाम किया।

सोमदत पूछयो समचार, सोइ सो सुत कीयो उचार।
बार उमावस गुजरी करै, विध विधान सहित आचरे।।136।।

सोमदत ने अपने पुत्र से गुजरी का कुशल समाचार पूछा। जैसा समाचार था, वैसा ही सुत ने अपने पिता को कह सुनाया। यह गुजरी बारह अमावस्या का व्रत विधि विधान से करती है।

अमावस दिन ए काज न कीजे, अन परायो कबहु न लीजै।
तेल न जीमे अंग न लगावे, कांदा मूला कबहु न खावै।।137।।

अमावस्या के दिन निम्नलिखित ये कार्य न करें। पराया अन्न ग्रहण न करें, तेल का भोजन न करें और न ही शरीर में लगावें, प्याज, मूली अमावस्या में न खावें।

सोवा बैंगण गाजर त्यागै, मद मांस तै दूरिहि भागै।
रूंख न काटें हल नहीं खड़ियै, आखेटै कबहु नहीं चड़ीए।।138।।

सोवा, बैंगन, गाजर का सेवन अमावस्या में न करें। मद्य–मांस से दूर ही रहै, नजदीक भी न जायें। हरा वृक्ष नहीं काटें, हल नहीं चलायें, खेती का कोई कार्य न करें तथा भ्रमण करने के लिये या वन्य जीवों को सताने वाला कार्य अमावस्या में कभी न करें।

लीलो दांतण कीजै नांही, पंथ न चलिये मावस मांही।
मावस दिन खाट नहीं सोवे, दधि नहीं मथै बसन नहीं धोवे1।।139।।

हरे वृक्ष की टहनी तोड़ कर दांतुन न करें, मार्ग पर चलकर कहीं अन्य गांव न जावें। अमावस्या को व्रत रख करके सांसारिक भोग विलास आदि कार्य न करें, दही बिलोने का कार्य न करें तथा कपड़े भी न धोयें।

चोरी जारी मिथ्या वाद, हिंसा दंभ कपट मन स्वाद।
ए सकल मनमें नहीं ल्यावै, निरमल गुण हरिजी के गावे।।140।।

चोरी, जारी, मिथ्या वाद–विवाद करना, हिंसा, दंभ, कपट मन की इच्छा पर चलना ये सभी मन में भी न लायें। निर्मल मन हो करके हरि विष्णु के गुणों का गान, भजन कीर्तन करें।

कथा किरतन हरि जस सुने, विष्णु नाम प्रीति सूं भने
इही प्रकार मावस व्रत राखे, ताको फल नारायण भाखे।।141।।

अमावस्या के दिन भगवान की कथा एवं हरिजस सुने, हृदय में भगवान का नाम प्रेमपूर्वक उच्चारण करें। इस प्रकार से विधिविधान सहित अमावस्या का व्रत रखें तो नारायण भगवान विष्णु जी का यह कहना है कि मृत्यु को प्राप्त हुआ भी जीवनदान प्राप्त कर सकता है, यही फल है।

गउ सहंस दान फल जितो, मावस व्रत राख्यौ फल बितो।
और सकल तीरथ जो न्हावै, मावस व्रत तैसो फल पावे।।142।।

हजारों गऊवों का दान देने में जितना फल मिलता है, उतना फल अमावस्या का व्रत रखने में प्राप्त हो जाता है। अन्य सभी तीर्थों में स्नान कर आओ, चाहे अमावस्या का व्रत रख लो, दोनों का फल बराबर है।

मावस व्रत की इह बड़ाई, अन्तकाल बैकुण्ठे जाइ।
सूको काठ अग्नि ज्यूं बारे, इह व्रत ऐसे अघ कूं जारे।।143।।

अमावस्या के व्रत की यही बड़ाई है कि मृत्यु हो जाने पर अन्त समय में भगवान विष्णु के परम धाम बैकुण्ठ को प्राप्त कर लेता है। जिस प्रकार से सूखी लकड़ी को अग्नि जला देती है, उसी प्रकार से यह व्रत पापों को जला देता है।

मावस कथा सुने जो कोई, दस गऊ दान फल होई।
अच्युत कही अरजन के आगे, कथा सुनत पाप सब भागे।।144।।

जो कोई चित लगाकर अमावस्या की इस कथा का प्रेम से श्रवण करता है, उसे दस गऊ दान का फल प्राप्त होता है। भगवान कृष्ण ने यह कथा अर्जुन से कही थी। इस कथा के सुनते ही सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये।

दोहा—

संवत् ससि सर बसुंधरा, मास नभा पख स्यांम।
तिथ सांत्यम सनिवार तब, कथा जु करी मुकाम।।145।।

विक्रम संवत् 1851 श्रावण कृष्ण पक्ष सप्तमी शनिवार को यह कथा साधु मयाराम ने मुकाम में सम्पूर्ण की है।

ब्रह्मादिक पावै नहीं अदभुत जाको भेव।
पींपासर सौ प्रगटे, द्वादश कारण देव।।146।।

उस परमपिता परमात्मा सदगुरूदेव जाम्भेश्वर जी का अद्भुत चरित्र है, जिनका भेद ब्रह्मादिक भी नहीं पहचान कर सकते। ऐसे परमदेव पींपासर में प्रकट हुए हैं। बारह करोड़ जीवों के उद्धार के लिये मैं अल्प बुद्धि उनके भेद को क्या जानूं।

सुभ सुथान देवल प्रगट, झंभ देव को धाम।
अमावस महमा सहित, कथा करी जु मयाराम।।147।।

शुभ स्थान तालवा ग्राम में जहां जम्भेश्वर जी का धाम मुकाम है, उस पवित्र समाधि के निकट बैठकर अमावस्या व्रत कथा महिमा सहित मैं साधु मयाराम वर्णन करके प्रस्तुत करता हूं।

सीश धरणी धर करत हूं, नमस्कार सौ बार।
इष्टदेव मम झंभगुरू, लीला हित अवतार।।148।।

गुरूदेव के चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम करते हुए कहता हूं–मेरे इष्टदेव जम्भगुरू जी को बारंबार नमन है। भगवान विष्णु ही जो लीला हेतु अवतार लेते है।

''इति श्री महाभारते कृष्ण अर्जुन संवादे अमावस महात्म कथा मयाराम विरचितायां समापतोयं। संवत् 1878 रा मिती सुदि 5 मंगलवार लिखते साध हरकिसन जी का शिष्य परसराम।''

श्री संत वील्हा जी कृत बतीस आखड़ी

''छन्द''

सेरा उठै सुजीव, छाण जल लीजिये।
दांतण कर करे सिनान, जिवाणी जल कीजिये।।1।।
बैस इकायंत ध्यान, नाम हरि पीजिये?
रवि उगे तेही बार, चरण सिर दीजिये।।2।।
गऊ घृत लेवे छाण, होम नित ही करो।
पंखे से अग्न जगाय, फूंक देता डरो।।3।।
सूतक पातक टाल, छाण जल पीजिये।
कर आत्म को ध्यान, आरती कीजिये।।4।।
मुख बोली जै साच, झूठ नहीं भाखिये।
नेम झूठ सूं जाय, जीभ बस राखिये।।5।।
निज प्रसुवा गाय, चूंगती देखिये।
मुखां बताइये नांही, और दिस पेखिये।।6।।
अमावस व्रत राख, खाट नहीं सोईये।
चोरी जारी त्याग, कुदृष्ट न जोईये।।7।।
नेम धर्म गुरू कहे, कदे नहीं छोड़िये।
लाधी वस्तु पराई, बोल देवोड़िये।।8।।
जीव दया नित राख, पाप नहीं कीजिये।
जांडी हिरण संहार, देख सिर दीजिये।।9।।
बधिया करै तो बैल, जु देख छोड़ाइये।
बरजत मारै जीव, तहां मर जाइयै।।10।।
ऋतुवन्ती हवै नार, पलो नहीं छुइये।
पांचूं कपड़ा धोय, नहाय सुधि होइये।।11।।
सूतक पातक अन्त, घरहुं लिंपाइये।
गऊ घृत सुध छाण, जु होम कराइये।।12।।
जल छाणैं दोय बार हि, सांझ सबेरे ही।
जीवाणी जल जोड़, कुवै जाय गेरही।।13।।

राख दया घट मांह, वृक्ष घावै नहीं।
घर आवे नर कोय, भूखो जावै नहीं।।14।।
अमावस दिन धर्म, इता नित पालिये।
गाय र बच्छो बैल, बेचण सूं टालिये।।15।।
पथ न चालै भूल, खाट न सोइये।
ऊखल खड़वे नाहीं, चाकी नहीं झोइये।।16।।
वस्त्र धोवे नांहिं, सीस नहीं धोइये।
जूवा लीखा नाव, लिया पुन खोइये।।17।।
औले अमावस दूध, दही नहीं मथ्थिये।
साखी हरीजस गाय, ज्ञान गुण कथिये।।18।।
दांती कसी गंडासी, बाण नहीं बाइये।
धोबी चकरी ढ़ेढ़, घरे नहीं जाइये।।19।।
चमारां घर जाय, भूल करि बैठ है।
नरक पड़ै निरधार, रकत में पैठ है।।20।।
आन जात को पाणी, भूल नहीं पीजियै।
बिन मांज्या बरतन, कबहुं नहीं लीजिये।।21।।
चौके बिना रसोई, कबहुं मत करो।
गऊ बैठक शत ग्रेह, करत तुम जन डरो।22
ब्राह्मण दस प्रकार, तीन सुध जानिये।
अमल तमाखू भांग, लील नहीं ठानिये।।23।।
इह औगण नहीं होय, विप्र सुध है सही।
और छतीसूं पूंण, एक सम गुरू कही।।24।।
वे अस्नाने कोय, जो पलो लगावही।
न्हाये ते सुध होय, गुरू फरमावही।।25।।
अपने घर में बैठ, निंद्या नहीं कीजिये।
देख्या सुण्या अदेख, जु अजर जरीजिये।।26।।
त्रिधा देवा साधा, सुं संग कीजिये।
गुरू ईश्वर की आण, नहीं भानीजिये।।27।।
हल अरू गाडो गाड़ी, बैल नहीं बाहिये।
जीव मरे जेहि काम, कदे न कराइये।।28।।
अमावस को दूध जू, भूल न भलोय है।
कदेन उतरे पार, रक्त सम होय है।।29।।

होके पाणी आग, कदे नहीं दीजिये।
अमल तमाखू नाम, भूल नहीं लीजिये।।30।।

जूवा लीखा काढ़, छांव में डारिये।
इन मारया सुख होय, पुत्र क्यूं नीं मारिये।।31।।

घर को बकरो भेड़, थाट संग कीजिये।
बेच्यो कुट्यो बैल, उलट नहीं लीजिये।।32।।

तीसां ऊपर दोय, आखड़ी गुरू कही।
जो विश्नोई होय, धर्म पाले सही।।33।।

गहै धर्म बत्तीस, तीर्थ सब नहाइयां।
अड़सठ तीरथ पुण्य, घरा चल आविया।।34।।

गह गुनतीस बतीस, विष्णु जन जानिये।
इकसठ सातूं छोत, अड़सठ एहि मानिये।।35।।

देखा देखी तीर्थ, और नहिं कीजिये।
मन सुरती कूं जीत, परम पद लीजिये।।36।।

पाले गुरू का कवल, जम्भगुरू ध्याव है।
घाटो भूख कुरूप, कदे नहीं आव है।।37।।

यहि विधि धर्म सुनाय, कहयौ गुरू जगत ने।
अज्ञानी कूं डांस, प्रिये ज्ञानी भक्त ने।।38।।

या विधि धर्म सुनायके, किये कवल किरतार।
अन्न धन लक्ष्मी रूप गुन, मूवां मोक्ष दवार।।39।।

——————000——————

''आरती–1''

आरती कीजे गुरू जम्भ जती की, भगत उधारन प्राण पति की
पहली आरती लोहट घर आये, बिन बादल प्रभु इमिया झुराए।
दूसरी आरती पींपासर आये, दूदा जी ने प्रभु परचो दिखाए।
तीसरी आरती समराथल आए, पूला जी ने प्रभु स्वर्ग दिखाए।
चौथी आरती अनूवे निवाए, बहुत लोग प्रभु पवित्र कहाए।
पांचवीं आरती ऊधो जन गावे, सो गावे अमरापुर पावे।

''आरती–2''

आरती कीजे श्री जम्भ तुम्हारी, चरण शरण मोही राखो मुरारी
पहली आरती उनमुन कीजे, मन बच कर्म चरण चित दीजे।।
दूसरी आरती अनहद बाजा, श्रवणे सुना प्रभु शब्द अवाजा।।
तीसरी आरती कंठासुर गावे, नवध्या भक्ति प्रभु प्रेम रस पावे।
चौथी आरती हिरदै में पूजा, आत्मदेव प्रभु और न दूजा।।
पांचवीं आरती प्रेम प्रकाशा, कहत ऊधो साधो चरण निवासा।।

''आरती–3''

आरती कीजे श्री महाविष्णु देवा, सुरनर मुनिजन करे सब सेवा
पहली आरती शेष पर लोटे, श्री लक्ष्मी जी चरण पलोटे।।
दूसरी आरती क्षीर समुद्र ध्यावे, नाभ कमल ब्रह्मा उपजाए।।
तीसरी आरती विराट अखण्डा, जाके रोम कोटि ब्रह्मण्डा।।
चौथी आरती वैकुण्ठे विलासी, काल अंगूठ सदा अविनाशी।।
पांचवीं आरती घट–घट वासा, हरि गुण गावे ऊधौ जी दासा।।

''आरती–4''

आरती हो जी सम्भराथल देव, विष्णु हर की आरती जय।
थारी करे हो हांसल दे माय, थारी करे हो भक्त लिवलाय।टेक।
सुर तेतीसां सेवक जांके, इन्द्रादिक सब देव।
ज्योति स्वरूपी आप निरंजन, कोई एक जानत भेव।1।
पूर्ण सिद्ध जम्भगुरु स्वामी, अवतरे केवलि एक।
अन्धकार के नाशन कारण, हुए हुए आप अलेख।2।
सम्भराथल हरि आन विराजे, तिमिर भये सब दूर।
सांगा राणा और नरेशा, आये आये सकल हजूर।3।
सम्भराथल की अद्भुत शोभा, वरणी न जात अपार।
सन्त मण्डली निकट विराजे, निर्गुण शब्द उच्चार।4।
वर्ष इक्यावन देव दया कर, कीन्हों पर उपकार।
ज्ञान ध्यान के शब्द सुणाये, तारण भव जल पार।5।
पंथ जाम्भाणों सत कर जाणों, यह खांडे की धार।

सत प्रीत सूं करो कीर्तन, इच्छा फल दातार।6।
आन पंथ को चित से टारो, जम्भेश्वर उर ध्यान।
होम जाप शुद्ध भाव से कीजै, पावो पद निर्वाण।7।
भक्त उद्धारण काज संवारण, श्री जम्भ गुरु निज नाम।
विघ्न निवारण शरण तुम्हारी, मंगल के सुख धाम।8।
लोहट नन्दन दुष्ट निकन्दन, श्री जम्भ गुरु अवतार।
ब्रह्मानन्द शरण सतगुरु की, आवागवण निवार।9।

''आरती–5''

आरती कीजै श्री जम्भगुरु देवा, पार नहीं पावै बाबो अलख अभेवा।टेक।
पहली आरती परम गुरु आये, तेज पुंज काया दरसाये।1।
दूसरी आरती देव विराजै, अनंत कला सतगुरु छवि छाजै।2।
तीसरी आरती त्रिसूल ढ़ापै, खुध्या तृष्णा निंदरा नहीं व्यापै।3।
चौथी आरती चहुंदिश परसै, पेट पूठ नहीं सनमुख दरसै। 4।
पांचवी आरती केवल भगवंता, शब्द सुण्या यो जन पर्यन्ता।
ऊदोदासजी आरती गावै, श्री जम्भगुरु जी को पार न पावै।5

''दोहा''

संध्या सुमरण आरती, भजन भरोसे दास।
मनसा वाचा कर्मणा, सतगुरु चरण निवास।
पींपासर सूं परगटे, द्वादश कारण देव।
ब्रह्मादिक पावै नहीं, अद्‌भुत जांको भेव।
सीस धरणी धर करत हूं नमस्कार सौ बार।
इष्ट देव बाबो जम्भगुरु, लीला हित अवतार।

–0–0–0–

श्री वील्हो जी कृत धूप मंत्र

ओ३म् वर्ष सात संसार, बाल लीला निरहारी।
वर्ष पांच बाईस, पाले बहुता धेनु चारी।
ग्यारह ऊपर चालीस, शब्द कथिंया अविनाशी।

बाल ग्वाल गुरू ज्ञान, सकल पूगा सवा पच्यासी।
पन्दरासै तिरानवै वदि, मिंगसर नौ आगले।
पालटियो रूप रहिया ध्रूव, इडिग ज्योति संभराथले।

-0-0-0-

-: **छप्पय** :-

श्री सन्त वील्हा जी कृत

ॐ जम्भ गुरु जगदीश, ईश नारायण स्वामी।
निर लेखक निरलेप, सकल घट अन्तर्यामी।
पेट पीठ नहिं ताहि, सकल को सन्मुख दर्शे।
पाप ताप तन हरे, जहां पद पंकज पर्शे।
अखे अडोल अनन्त अज, अवगत अलख अभेव।
स्वयं स्वरूपी आप है, जम्भगुरू जगदेव।
जम्भगुरू जगदेव, भेव कोई बिरला पावै।
रहै शरण जो आय, बहुरि भवजल नहि आवै।
विष्णु धर्म परगट कियो, धर्म विकट विहंडनम्।
संभराथल परगट सही, ज्योति स्वरूप जगमण्डनम्।

।। इति ।।